बुधवार
20 मई 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 116
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94 email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

अस्पताल में लगी आग

एक महिला की मौत, 10 घायल

हमारे संवाददाता

देहरादून। नेहरु कॉलोनी क्षेत्र में एक निजी अस्पताल में आज सुबह आग लगने से जहां एक महिला की मौत हो गयी वहीं 10 लोग घायल हुए है। सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर सभी को बाहर निकालकर दूसरे निजी अस्पताल में पहुंचाया जहां उनका उपचार जारी है। हालांकि रेस्क्यू के दौरान तीन पुलिसकर्मी भी घायल हुए है। जिन्हे भी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जानकारी के अनुसार आज सुबह कंट्रोल रूम के माध्यम से थाना नेहरू कॉलोनी पुलिस को सूचना मिली कि रिस्पना पुल के पास स्थित पेनिसिया अस्पताल में आग लग गयी है। जिस कारण अंदर मरीज फंसे हुए है। सूचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुए पुलिस बल मौके पर पहुंचा, जहां जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि पेनेशिया अस्पताल के आईसीयू में एसी के ब्लास्ट होने पर उक्त आगजनी की घटना हुई। मौके पर पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए आईसीयू में एडमिट मरीजों को रेस्क्यू कर बाहर निकाला गया। रेस्क्यू के दौरान आईसीयू में गैस व धुँए के कारण कुछ मरीजों एवं पुलिस कर्मियों को भी

ऑक्सीजन की कमी होने के कारण उन्हें कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उपचार के दौरान पेनेसिया हॉस्पिटल के आईसीयू में पहले से ही वेंटिलेटर पर रखी गई एक बुजुर्ग महिला की मृत्यु हो गई।

घटना की सूचना मिलने पर एसएसपी देहरादून तथा एसपी सिटी द्वारा तत्काल मौके पर पहुँचकर उपस्थित अधिकारियों से घटना के संबंध में जानकारियां लेते हुए उन्हें आवश्यक निर्देश दिए गए। इस दौरान एसएसपी देहरादून द्वारा कैलाश अस्पताल में जाकर रेस्क्यू अभियान के दौरान ऑक्सिजन की कमी के चलते भर्ती पुलिसकर्मियों से मुलाकात की गई तथा उनके उपचार में लगे चिकित्सकों से मरीजों/ पुलिस कर्मियों के स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी प्राप्त की गई।

घटना में 10 व्यक्ति घायल हो गए व 1 बुजुर्ग महिला, जो पहले से ही वेंटिलेटर पर थी, की मृत्यु हो गई तथा राहत एवं बचाव कार्य में लगे 3 पुलिस कर्मियों को भी स्वास्थ्य संबंधित दिक्कतें आयी। घायल व्यक्तियों के नाम राहुल कुमार पुत्र महेंद्र सिंह निवासी गांव बूंद की मिल थाना नगीना नजीबाबाद बिजनौर, मुकेश पुत्र रामपाल निवासी गांव नंदनपुर हिमाचल प्रदेश हिमाचल प्रदेश, शंभू दास पुत्र गिरवानदास निवासी भगवानपुर हरिद्वार, गोरी पुत्री रेनू निवासी चंद्रपुर चंद्रपुर सहारनपुर, दौलत सिंह उम्र लगभग 45 वर्ष पुत्र देव सिंह नेगी निवासी नंदा नगर चमोली, बेबी उर्फ पायल नवजात निवासी अज्ञात, संगीता देवी पता अज्ञात, खान बहादुर पुत्र मुख्तियार निवासी मंगलौर हरिद्वार, नित्यानंद पुत्र सोमपाल निवासी भगवानपुर हरिद्वार व निहाल पुत्र घसीटा निवासी नेहटौर, जिला बिजनोर,(कोरोनेशन अस्पताल में भर्ती) है। वहीं मृतक महिला की पहचान वीरवती पत्नी अमरनाथ निवासी ग्राम कांवली, बल्लीवाला, देहरादून के रूप में की गयी है।

बचाव कार्य के दौरान घायल हुए पुलिसकर्मियों के नाम अ.उ.नि. नरेंद्र कुमार (ट्रैफिक), कानि. बृजमोहन रावत (थाना नेहरू कॉलोनी) व कानि. बृजमोहन कनवासी (थाना नेहरू कॉलोनी) बताये जा रहे है।

‘तिरंगे में लिपटा एक युग’

❑नम आंखों के बीच पंचतत्व में विलीन हुए जनरल बीसी खंडूड़ी

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति और भारतीय सेना का एक अनुशासित, सादगीपूर्ण और ईमानदार चेहरा आज पंचतत्व में विलीन हो गया। मेजर जनरल भुवन चंद्र खंडूड़ी की अंतिम यात्रा में उमड़ा जनसैलाब केवल एक राजनेता को विदाई देने नहीं, बल्कि एक ऐसे व्यक्तित्व को अंतिम प्रणाम करने पहुंचा था, जिसने जीवनभर अनुशासन, सादगी और जनसेवा को अपनी पहचान बनाए रखा।

तिरंगे में लिपटा पार्थिव शरीर जब अंतिम यात्रा के लिए निकला तो माहौल गमगीन हो उठा। हर आंख नम थी, हर चेहरा शांत और हर मन में एक ही भावकृएक ईमानदार दौर अब स्मृति बन गया। सेना के जवानों की सलामी, गूंजते राष्ट्रगान और खंडूड़ी अमर रहें के नारों के बीच जैसे पूरा उत्तराखंड अपने उस जनरल को विदा कर रहा था, जिसने सत्ता में रहकर भी सादगी नहीं छोड़ी। अंतिम यात्रा में बुजुर्गों की आंखों में सम्मान था तो युवाओं के चेहरों पर एक अलग तरह की उदासी। पहाड़ के गांवों से आए कई लोग सिर्फ एक झलक पाने के लिए घंटों खड़े रहे। उनके लिए खंडूड़ी केवल मुख्यमंत्री नहीं थे, बल्कि राजनीति में भरोसे और साफ छवि का प्रतीक थे।

उत्तराखंड की राजनीति में अक्सर यह कहा जाता रहा कि खंडूड़ी हैं जरूरी। यह केवल चुनावी नारा नहीं था, बल्कि उस जनविश्वास की अभिव्यक्ति थी जो उन्होंने अपने व्यवहार और निर्णयों से अर्जित किया। राजनीति के शोर और

आरोपों के बीच भी उनकी छवि एक सख्त लेकिन ईमानदार प्रशासक की बनी रही। सेना से राजनीति तक का उनका सफर भी असाधारण रहा। फौजी अनुशासन उनके व्यक्तित्व में अंतिम समय तक दिखाई देता रहा। शायद यही कारण था कि उनकी अंतिम यात्रा में केवल राजनीतिक कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि आम लोग, पूर्व सैनिक, युवा और कर्मचारी वर्ग भी बड़ी संख्या में मौजूद रहा।

हरिद्वार में गंगा की लहरों की कलकल के बीच जब उनके पार्थिव शरीर को मुखाग्नि दी गई, तो मानो पहाड़ का एक रक्षक हमेशा के लिए सो गया। अंतिम यात्रा देहरादून से शुरू होकर जैसे-जैसे आगे बढ़ी, सड़क के दोनों ओर हजारों की संख्या में लोग हाथ जोड़े, आंखों में आंसू लिए खड़े थे। पवित्र गंगा घाट पर जब सेना के बिगुल ने अंतिम शोक ध ुन बजाई, तो वहां मौजूद हर शख्स की आंखें छलक उठीं। मातमी धुन के बीच सेना के जवानों ने हवा में गोलियां दागकर अपने पूर्व जनरल को अंतिम सलामी दी।

जब चिता की लपटें उठीं तो कई आंखें भर आईं। ऐसा लगा जैसे उत्तराखंड की राजनीति का एक सादा, शांत और विश्वसनीय अध्याय धीरे-धीरे धुएं में बदलकर इतिहास का हिस्सा बन रहा हो। समय आगे बढ़ जाएगा, नई सरकारें

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

दून वैली मेल

संपादकीय

बेमिसाल शख्सियत को शत-शत नमन

मेजर जनरल भुवन चंद खंडूरी अब हमारे बीच नहीं रहे। कल दोपहर जैसे ही यह समाचार आया तो हर एक मन को एक धक्का जैसा लगा। प्रतीत हुआ जैसे कोई बहुमूल्य वस्तु हमसे छीन ली गई हो जिसकी रिक्तता को भरना मुश्किल ही नहीं असंभव है। मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है। नौ दशक लंबा जीवन कम नहीं होता है। बीसी खंडूरी ने निसंदेह एक भरा-पूरा और सफल ऐसा जीवन जिया जो कुछ ही भाग्यशाली लोगों को या यूं कहें कर्मवीरों को नसीब होता है। बचपन से लेकर शिक्षा दीक्षा और देश सेवा के लिए समर्पित जीवन के 39 साल जो उन्होंने सेना को दिए तथा लगभग 30 साल जो राजनीति को दिए हर जगह उन्होंने अपनी अनुशासनिक कठोर कार्य शैली का परिचय दिया। जिसके कारण उन्हें सेना का अति विशिष्ट सेवा पदक दिया गया। राजनीति जिसको काजल की कोठरी कहा जाता है, जैसे क्षेत्र में अपनी ईमानदार छवि और भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त रुख रखने वाले बीसी खंडूरी को अगर पूरा देश मिस्टर क्लीन के नाम से जानता है तो यह वर्तमान दौर के राजनीतिक परिवेश में उनकी बड़ी उपलब्धियों में से एक है। स्वर्गीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के सानिध्य में अपनी राजनीतिक पाली शुरू करने वाले बीसी खंडूरी पांच बार पौड़ी संसदीय सीट से चुनाव जीतकर लोकसभा सदस्य रहे तथा उनकी सरकार में 2003-2004 में भूतल परिवहन मंत्रालय का कार्य भी संभाला। इस दौरान उनके द्वारा पूरे देश के चारों कोनों को जोड़ने के लिए शुरू की गई स्वर्ण चतुर्भुज जैसी परियोजना को लाकर किया, जो अत्यंत ही चर्चित रही। कई लोग उस समय उन्हें मजाकिया अंदाज में रोड मिनिस्टर की जगह रोड मास्टर भी कहते थे। अपनी बेदाग छवि निष्पक्ष और ईमानदार कार्यशैली और कठोर अनुशासित शासन के लिए पक्ष ही नहीं विपक्ष के नेता भी उनकी हमेशा सराहना करते रहे हैं। 2007 में जब भाजपा उत्तराखंड में सत्ता में आई तो केंद्रीय नेतृत्व द्वारा उत्तराखंड का मुख्यमंत्री उन्हें नियुक्त किया गया। लेकिन राज्य की भाजपा ने सहजता से उन्हें स्वीकार नहीं किया गया क्योंकि उन्हें वैसी अनुशासन कार्यशैली की आदत ही नहीं थी जैसी की बीसी खंडूरी को पसंद थी देश में उत्तराखंड पहला राज्य था जहां बीसी खंडूरी द्वारा लोकायुक्त का गठन किया गया। अन्ना हजारे के आंदोलन से भ्रष्टाचार के खिलाफ सबसे मारक माने जाने वाले लोकायुक्त का आज तक भी विधिवत गठन राज्य के नेताओं ने नहीं होने दिया क्योंकि वह वित्तीय अनुशासन चाहते ही नहीं है। इसी एक कारण ने उन्हें सीएम की कुर्सी पर नहीं टिकने दिया वह भले ही 2012 के चुनाव से पूर्व दोबारा सीएम बना दिए गए थे लेकिन पार्टी के षड्यंत्रकारी नेताओं ने उन्हें चुनाव हरा दिया। भले ही आज वर्तमान की राजनीति में सीएम पुष्कर सिंह धामी को कोई धाकड़ धामी और कोई धुरंधर धामी जैसी शब्दावली से नवाजता हो लेकिन उत्तराखंड की राजनीति में बीसी खंडूरी जैसा न धाकड़ सीएम कोई रहा है न कोई धुरंधर रहा है अपनी ईमानदार बेदाग छवि और कठोर अनुशासन प्रियता के कारण सूबे की राजनीति में उन्हें जो सम्मान हासिल है उसका कोई दूसरा उदाहरण नहीं हो सकता। उनके कृतित्व और सेवाओं के लिए समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा। ईश्वर उनकी दिव्य आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें। उनका जाना समाज व राजनीति के लिए अपूरक क्षति है जिसे कोई पूरा नहीं कर सकता।

लैब में युवती से अश्लील हरकत, हंगामा

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। गंगनहर कोतवाली क्षेत्र स्थित एक निजी ब्लड टेस्टिंग लैब में युवती के साथ अश्लील हरकत का मामला सामने आने के बाद क्षेत्र में तनाव की स्थिति फैल गई। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में हिंदू संगठन के कार्यकर्ता मौके पर पहुंच गए और जमकर हंगामा काटा, वही पुलिस ने भी आरोपी को हिरासत में लेकर जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार गंगानगर क्षेत्र की एक निजी ब्लड टेस्टिंग लैब में कार्यरत मोहम्मद अकरम पर आरोप है कि उसने लैब में आई एक युवती के साथ आपत्तिजनक हरकत की। बताया जा रहा है की घटना के दौरान वहां मौजूद लोगों ने आरोपी को पकड़ लिया साथ ही उसकी जमकर पिटाई कर डाली।

वहीं घटना की खबर फैलते ही हिंदू संगठन के कार्यकर्ता लैब के बाहर एकत्र हो गए और आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग को लेकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। वहीं घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और किसी तरह माहौल शांत कराया। पुलिस आरोपी मोहम्मद अकरम को अपने साथ ले गई जहां युवती की तहरीर के आधार पर संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है और जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

उत्तराखंड में विस चुनाव 2027 के संभावित मुद्दे (भाग-13)

भर्ती घोटाले और भ्रष्टाचार की आग में तपेगा 2027 का चुनावी रण

'सपनों' की नीलामी पर सिस्टम की 'खामोशी'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति लंबे समय तक विकास, पलायन, सड़क और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमती रही, लेकिन अब प्रदेश एक ऐसे मोड़ पर खड़ा दिखाई देता था। उत्तराखंड जैसे छोटे राज्य में सरकारी नौकरी सिर्फ रोजगार नहीं होती, वह परिवार की आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक सम्मान और स्थिर

●पेपर लीक, नियुक्तियों पर सवाल और सिस्टम पर अविश्वास
●युवाओं की नाराजगी क्या बदल देगी राजनीति का समीकरण
●उत्तराखंड राज्य की राजनीति के लिए यह चेतावनी का समय
●इतिहास गवाह है, जब-जब भरोसा टूटा तब सरकारें ही बदली

भविष्य का प्रतीक होती है। पहाड़ के गांवों से निकलने वाला युवा सीमित संसाधनों के बावजूद दिन-रात तैयारी करता है। माता-पिता खेत बेचकर और कर्ज लेकर बच्चों को पढ़ाते हैं। लेकिन जब परीक्षाओं के पेपर बाजार में बिकने लगें, नियुक्तियों पर सवाल उठने लगें और मेहनत की जगह सिस्टम की चर्चा होने लगे, तब सबसे पहले भरोसा मरता है।

यही कारण है कि भर्ती घोटाले उत्तराखंड में केवल कानूनी या प्रशासनिक मुद्दा नहीं रह गए हैं। यह अब भावनात्मक और राजनीतिक संकट बन चुका है। युवाओं के भीतर यह भावना गहराती जा रही है कि सत्ता और व्यवस्था उनके भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है। यही आक्रोश आने वाले विधानसभा चुनावों में निर्णायक रूप ले सकता है।

प्रदेश में पटवारी भर्ती, पुलिस भर्ती, विधानसभा भर्ती और विभिन्न आयोगों की परीक्षाओं को लेकर उठे विवादों ने सरकार और व्यवस्था दोनों की साख को झटका दिया। कई परीक्षाएं रद्द हुईं, गिरफ्तारियां भी हुईं, लेकिन युवाओं के मन में बैठा अविश्वास अभी खत्म नहीं हुआ है। गांवों में चौपालों से लेकर शहरों के कोचिंग सेंटरों तक एक ही चर्चा सुनाई देती हैकृक्या मेहनत करने वालों को सच में न्याय मिलेगा?

राजनीतिक दल भी अब इस मुद्दे की गंभीरता को समझने लगे हैं। विपक्ष लगातार सरकार को भर्ती माफिया और सिस्टम में भ्रष्टाचार के मुद्दे पर घेर रहा है, जबकि सत्तापक्ष कार्रवाई और सख्त कानूनों का हवाला देकर खुद को जवाबदेह साबित करने की कोशिश कर रहा है। लेकिन चुनावी राजनीति में धारणा अक्सर तथ्यों से ज्यादा असर डालती है और यही चिंता सत्ता पक्ष के भीतर भी दिखाई देने लगी है।

विशेषज्ञ मानते हैं कि उत्तराखंड जैसे छोटे राज्य में सरकारी नौकरी केवल रोजगार नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और परिवार की आर्थिक सुरक्षा का सबसे बड़ा माध्यम मानी जाती है। ऐसे में भर्ती प्रक्रियाओं पर उठे सवाल सीध ` लाखों युवाओं और उनके परिवारों की भावनाओं से जुड़ जाते हैं। यही कारण है कि यह मुद्दा केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि भावनात्मक और राजनीतिक रूप ले चुका है।

पहाड़ के दूरस्थ गांवों में रहने वाले

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

सिस्टम की साख पर लगा बट्टा

उत्तराखंड राज्य आंदोलन की नींव में यह सोच थी कि यहाँ के संसाधनों पर यहाँ के युवाओं का हक होगा। लेकिन हालिया वर्षों में यूकेएसएसएससी से लेकर लोक सेवा आयोग तक की परीक्षाओं में जो कुछ देखने को मिला, उसने पूरे सिस्टम की साख पर बट्टा लगा दिया है। जब परीक्षा से ठीक पहली रात को पेपर लाखों रुपयों में बिक जाता है, तो वह केवल एक कागज का टुकड़ा नहीं बिकता, बल्कि उस गरीब मां-बाप की उम्मीदें नीलाम होती हैं जिन्होंने पेट काटकर अपने बच्चे को पढ़ाया होता है। अखबारों की सुर्खियां गवाह हैं कि जांचें हुईं, गिरफ्तारियां भी हुईं, लेकिन युवाओं के मन में यह सवाल आज भी जस का तस हैकृ क्या इस खेल के असली मगरमच्छ कभी पकड़े जाएंगे?

बिकाऊ तंत्र के आगे बेबस युवा

उत्तराखंड के गठन के ढाई दशक बाद भी अगर युवाओं को योग्यता के बजाय सिफारिश और पैसों के दम पर नौकरियां मिलने का डर सताए, तो यह पूरे नीतिगत ढांचे की विफलता है। 2027 का चुनाव यह तय नहीं करेगा कि कौन सी पार्टी जीतेगी, बल्कि यह तय करेगा कि क्या उत्तराखंड का युवा अब भी बिकाऊ तंत्र के आगे बेबस रहेगा या फिर अपने वोट की चोट से एक नया, पारदर्शी और जवाबदेह उत्तराखंड लिखेगा। पहाड़ की जवानी अब चुप रहने के मूड में नहीं है, और यही इस बार के लोकतंत्र के महापर्व का सबसे बड़ा सच है।

कभी 'गुस्ताखियों' का इलाज थी 'कंडाली थेरेपी'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। पहले पहाड़ में बच्चे की गुस्ताखियों की एक ही सजा होती थी कंडाली की छपाक। आज पहाड़ के गांव खाली हो रहे हैं और जो बच्चे शहरों के कान्वेंट स्कूलों में पढ़ रहे हैं वह बच्चे प्राचीन कंडाली थेरेपी से कोसों दूर हैं। आज की पीढ़ी के लिए अनुशासन का मतलब मोबाइल छीन लेना या इंटरनेट बंद कर देना है। लेकिन जो लोग 80 या 90 के दशक में पहाड़ के सरकारी स्कूलों और खेतों में पले-बढ़े हैं वह जानते हैं कि कंडाली की उस छपाक ने उन्हें कितना मजबूत बनाया।

मोबाइल पर वरिष्ठ पत्रकार राहुल कोठियाल की एक रिपोर्ट देखते समय कंडाली की छपाक शब्द आया। खाना खाते समय बेटी भी साथ में बैठी थी, तो बेटी ने तपाक से पूछ लिया कि पापा यह कंडाली की छपाक क्या है। कुछ देर में खुद सकपका गया। मैं पहाड़ में जन्मा और कई बार कंडाली की छपाक लगी है। बेटी के प्रश्न का जवाब देने के लिए भूमिका बनाई और उसे विस्तार से जानकारी दी। उसी के बाद मन में आया कि आज बच्चे मोबाइल पर हैं कही न कही उन्हें

❑पहाड़ की डांट, दर्द और देसी अनुशासन था कंडाली की छपाक
❑कान्वेंट के दौर में गुम हुआ पहाड़ का वह पारंपरिक अनुशासन
❑कंडाली की छपाक बनाती थी फौलाद, अब बदल गया है समय
❑सजा नहीं थी बल्कि पहाड़ी जीवन के कठोर संस्कारों का हिस्सा

यह आर्टिकल घूम फिर कर मिल ही जाएगा और उन्हें कंडाली की छपाक पर विस्तार से पढ़ने को मिलेगा।

बता दें कि उत्तराखंड के गांवों में बचपन कभी केवल खिलौनों और मोबाइल की स्क्रीन में नहीं बीतता था। वहां खेत, जंगल, ढलानें थीं और उन्हीं के बीच जीवन के अपने देसी नियम भी थे और गलती होने परकृकंडाली की छपाक का नियम था। कंडाली यानी बिच्छू घास। पहाड़ के जंगलों और खेतों के किनारों पर उगने वाला यह पौधा जितना साध

ारण दिखता है, उसका स्पर्श उतना ही तीखा होता है। शरीर पर लगते ही जलन, चुभन और बेचैनी शुरू हो जाती है। लेकिन पहाड़ की पुरानी पीढ़ियों के लिए कंडाली केवल एक पौधा नहीं, बल्कि अनुशासन का देसी हथियार हुआ करती थी।

गांवों में जब बच्चे जरूरत से ज्यादा शरारत कर दें, खेतों में नुकसान कर दें, स्कूल से भाग जाएं या बड़ों की बात न मानें, तब कई घरों में डांट के साथ कंडाली की छपाक भी मिलती थी। बुजुर्ग आज भी मुस्कुराते हुए याद करते हैं कि मां या दादी खेत से ताजी कंडाली तोड़ लाती थीं और बस एक हल्की छपाक पूरे शरीर में बिजली-सी दौड़ा देती थी। उस दर्द में आंसू भी होते थे और डर भी। बच्चे घंटों खुजलाते रहते, लेकिन अगले कुछ दिनों तक गलती दोहराने की हिम्मत नहीं होती थी। पहाड़ के कठिन जीवन में यही देसी अनुशासन थाकृन कोई काउंसलिंग, न लंबी समझाइश, बस कंडाली की एक छपाक और सबक तैयार।

हालांकि आज के नजरिए से देखें तो

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

शिक्षकों और सुविधाओं के अभाव से जूझ रहा जीजीआईसी मलेथा

श्रीनगर गढ़वाल(आरएनएस)। विकासखंड कीर्तिनगर के ऐतिहासिक गांव मलेथा स्थित राजकीय बालिका इंटर कॉलेज (जीजीआईसी) लंबे समय से शिक्षकों और मूलभूत सुविधाओं की कमी से जूझ रहा है। विद्यालय में प्रधानाचार्य सहित कई प्रवक्ताओं के पद रिक्त पड़े हैं। वर्तमान में केवल दो स्थायी प्रवक्ता और एक अतिथि शिक्षक के सहारे इंटर कॉलेज का संचालन किया जा रहा है। जीजीआईसी मलेथा टिहरी जनपद के लक्ष्मोली, चोपड़िया, जुयालगढ़ और बोंगा सहित पौड़ी जनपद के बिलकेदार, नकोट, जनासू और अरकणी समेत करीब एक दर्जन से अधिक गांवों की छात्राओं के लिए महत्वपूर्ण शिक्षण केंद्र है। इसके बावजूद विद्यालय में पर्याप्त शिक्षकों और सुविधाओं का अभाव बना हुआ है जिससे कई छात्राओं को अन्य विद्यालयों में अध्ययन के लिए जाना पड़ रहा है। विद्यालय में वर्तमान में केवल भौतिक विज्ञान और जीव विज्ञान विषयों के प्रवक्ता तैनात हैं जबकि रसायन विज्ञान विषय में अतिथि शिक्षक की तैनाती है। हिंदी और अंग्रेजी विषयों के पद अब तक सृजित नहीं किए गए हैं। वहीं कला वर्ग के पद स्वीकृत न होने से क्षेत्र की छात्राओं को कला वर्ग में पढ़ाई के लिए जीआईसी कीर्तिनगर या राइंका डांगचौरा जाना पड़ता है। स्थानीय निवासी व पूर्व प्रधान शूरवीर बिष्ट ने बताया कि पूरे विकासखंड में बालिकाओं के लिए केवल दो इंटर कॉलेज हैं लेकिन जीजीआईसी मलेथा की स्थिति बेहद चिंताजनक बनी हुई है। विद्यालय में भवन, प्रयोगशाला और अन्य बुनियादी सुविधाओं की भी कमी है। यदि विद्यालय की व्यवस्थाओं में सुधार किया जाए तो क्षेत्र की बालिकाओं को काफी सुविधा मिलेगी।

लचर स्वास्थ्य सेवाओं के विरोध में निकाला मशाल जुलूस

नई टिहरी(आरएनएस)। भिलंगना ब्लॉक क्षेत्र की लचर स्वास्थ्य सेवाओं के विरोध में स्थानीय लोगों ने घनसाली बाजार में मशाल जुलूस निकालकर प्रदेश सरकार और स्थानीय विधायक का पुतला फूंका। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बेलेश्वर और पिलखी में डॉक्टरों और कर्मियों के रिक्त पदों पर नियुक्ति न होने पर कड़ा आक्रोश जताया। सरकार पर घनसाली क्षेत्र की उपेक्षा करने का आरोप लगाया। घनसाली जनसंघर्ष मोर्चा के बैनरतले स्थानीय लोगों ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बेलेश्वर और पिलखी में डॉक्टरों के रिक्त पदों पर नियुक्ति की मांग को लेकर बाजार में मशाल जुलूस निकाला। इस दौरान सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। बाद में विरोध स्वरूप सरकार और विधायक का पुतला फूंका। कहा कि लचर स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव में पिछले आठ माह के अंतर्गत क्षेत्र की पांच गर्भवती महिलाओं की मौत हो चुकी। बीते 16 मई को होल्टा गांव निवासी बबीता देवी की पहाड़ी से गिरने से घायल हो गई थी। अस्पताल में उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर करने के दौरान महिला की मौत हो गई। चेतावनी दी यदि जल्द क्षेत्र के अस्पताल में विशेषज्ञ डॉक्टरों और कर्मियों के रिक्त पदों पर नियुक्ति नहीं की गई उग्र आंदोलन शुरू किया जाएगा। इस मौके पर घनसाली जनसंघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष अनुज शाह, जिला पंचायत सदस्य विक्रम घणाता, व्यापार मंडल अध्यक्ष कैलाश बडोनी, संदीप आर्य, अरविंद राणा, सुनीता रावत, रघुवीर रावत आदि मौजूद रहे।

आठ जून से बीएलओ घर-घर जुटाएंगे मतदाताओं की जानकारी

पौड़ी(आरएनएस)। जिला सभागार स्थित एनआईसी कक्ष में सोमवार को जिलाधिकारी स्वाति एस. भदौरिया की अध्यक्षता में विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में पुनरीक्षण कार्यों की तैयारियों, प्रशिक्षण और व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई। डीएम ने बताया कि आठ जून से सात जुलाई तक बीएलओ घर-घर जाकर मतदाताओं की जानकारी एकत्र करेंगे। इससे पहले प्रशिक्षण, प्रिंटिंग और अन्य सभी आवश्यक कार्य सात जून तक पूरे कर लिए जाएंगे। प्रत्येक मतदेय स्थल पर डिजिटल कार्यों और डाटा अपलोडिंग के लिए आईटी स्वयंसेवकों की तैनाती की जाएगी। साथ ही शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की जरूरत के अनुसार अलग-अलग कार्मिक लगाए जाएंगे। जिलाधिकारी ने स्पष्ट किया कि पुनरीक्षण कार्य में लगे कार्मिक अवकाश की अनुमति केवल ईआरओ स्तर से ही प्राप्त करेंगे। उन्होंने प्रगणकों और सुपरवाइजरों के साथ नियमित बैठकें आयोजित करने के निर्देश भी दिए। बैठक में सीडीओ अशोक जोशी, संयुक्त मजिस्ट्रेट दीक्षिता जोशी, सहायक निर्वाचन अधिकारी शांति लाल शाह और सीईओ अत्रेश सयाना मौजूद रहे।अफवाहों में न आएं

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

—प्रबंधक विज्ञापन

ऋषिनगरी में उमड़ा आस्था का सैलाब

ऋषिकेश(आरएनएस)। चारधाम यात्रा के लिए आस्था का सैलाब उमड़ रहा है। यात्रा शुरू करने से पूर्व ऋषिकेश में ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए दिन निकलते ही विभिन्न राज्यों के तीर्थयात्रियों की भीड़ जुट रही है, जिससे यात्रा पर निर्भर परिवहन कारोबारियों के चेहरों पर रौनक है। वहीं, यात्री भी भगवान बदरी-केदार के जयकारों के साथ आस्थापथ पर रवाना हो रहे हैं। चारधाम ट्रांजिट केंद्र में स्थापित 24 रजिस्ट्रेशन काउंटरों सुबह से ही यात्री पंजीकरण के लिए कतारों में दिखे। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यात्रियों ने केंद्र में हेल्थ स्क्रीनिंग भी कराई। उन्हें केंद्र में संचालित अस्पताल में आवश्यक दवाओं का वितरण भी किया गया। शाम पांच बजे तक 17,651 यात्री चारधाम के लिए पंजीकरण करा चुके थे। जबकि, रजिस्ट्रेशन का क्रम रात तक जारी था। यात्रा प्रबंधन एवं नियंत्रण संगठन के ओएसडी डॉ. प्रजापति नौटियाल ने बताया कि यात्रियों को सुगम रजिस्ट्रेशन की सुविधा दी जा रही है। जरूरत पड़ने पर काउंटरों की संख्या को बढ़ाया भी जा सकता है।

वहीं, संयुक्त रोटेशन यात्रा व्यवस्था समिति की 50 बसें ऋषिकेश से रवाना हुई, जिनमें 1,629 यात्री सवार थे। अभीतक समिति की 1,033 बसों में 32,116 यात्री धामों के लिए जा चुके हैं। समिति अध्यक्ष भास्करानंद भारद्वाज ने बताया कि तीर्थयात्रियों के लिए पर्याप्त बसों की व्यवस्था की गई है।

श्रीहेमकुंड साहिब की यात्रा के लिए हरिद्वार रोड स्थित गुरूद्वारा श्रीहेमकुंड में सोमवार से श्रद्धालुओं के लिए चार रजिस्ट्रेशन काउंटरों को खोल दिया गया। यात्रा प्रबंधन एवं नियंत्रण संगठन के मुख्य कार्य अधिकारी मनमोहन सिंह और विशेष कार्याधिकारी डॉ. प्रजापति नौटियाल ने रजिस्ट्रेशन से जुड़ी व्यवस्थाओं को गुरूद्वारे में निरीक्षण भी किया। उन्होंने श्रीहेमकुंड साहिब प्रबंधन ट्रस्ट अध्यक्ष सरदार नरेंद्रजीत सिंह बिंद्रा से भी मुलाकात की। उन्हें रजिस्ट्रेशन से संबंधित जानकारी देते हुए जरूरत पड़ने पर काउंटरों की संख्या बढ़ाने का भरोसा भी दिया।

चारधाम यात्रियों के लिए ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन कराने को ट्रांजिट केंद्र में काउंटर स्थापित किए गए हैं। यहां प्रशासन ने यात्रियों के विश्राम और भोजन का भी इंतजाम किया है। स्थानीय व्यंजनों को बढ़ावे के लिए 12 महिला स्वयं सहायता समूहों स्टॉल दिए गए हैं।

इन स्टॉल पर यात्रियों के लिए पहाड़ी व्यंजन तैयार किए जा रहे हैं। अग्निशमन अधिकारी सुनील दत्त तिवारी ने स्टॉलों का जायजा लिया। उन्होंने स्टॉल संचालकों को आग से बचाव संबंधी उपकरण रखने के लिए कहा, जिससे कि आपात स्थिति तत्काल आग पर काबू पाया जा सके। बताया कि अग्निशमन कर्मचारियों की नियमित ड्यूटी भी ट्रांजिट केंद्र में लगाई जा रही है।

मलबे से पुजेली-चंदेली नहर क्षतिग्रस्त

उत्तरकाशी(आरएनएस)। पुजेली-चंदेली सिंचाई नहर पर सड़क कटिंग का मलबा डंप कर नहर को क्षतिग्रस्त किए जाने को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है। ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन दिया है। ग्रामीणों ने प्रशासन को चेतावनी दी है कि यदि एक सप्ताह के भीतर नहर को सुचारू नहीं किया गया और डंपिंग जोन नहीं बदला गया तो सड़क पर चक्का जाम आंदोलन किया जाएगा।

ग्रामीणों ने उपजिलाधिकारी मुकेश रमोला को ज्ञापन सौंपकर संबंधित ठेकेदार के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठाई। ग्रामीणों का कहना है कि सड़क निर्माण कार्य के दौरान निकाला गया मलबा सीधे नहर में डाला जा रहा है जिससे नहर कई स्थानों पर क्षतिग्रस्त और बंद हो गई है। इससे खेतों तक पानी नहीं पहुंच रहा है और सिंचाई व्यवस्था पूरी तरह प्रभावित हो गई है। ग्रामीणों ने बताया कि रामा एवं कमल सिरांई क्षेत्र में इस समय धान रोपाई, धान पौध एवं टमाटर पौध की सिंचाई सहित कृषि कार्यों का महत्वपूर्ण समय चल रहा है। ऐसे में नहर बंद होने से कई गांवों के किसानों के सामने गंभीर संकट खड़ा हो गया है।

सिडकुल में स्थिति सामान्य, अफवाहों से बचें श्रमिक : सहायक श्रम आयुक्त

हरिद्वार(आरएनएस)। औद्योगिक क्षेत्र में वेतन बढ़ोतरी को लेकर पिछले दिनों उत्पन्न भ्रम की स्थिति अब पूरी तरह सामान्य हो गई है। सहायक श्रम आयुक्त प्रशांत कुमार ने कहा कि जिले के करीब 25 औद्योगिक प्रतिष्ठानों के संविदा श्रमिकों की ओर से वेतन वृद्धि और अन्य मांगों को लेकर किए जा रहे धरना-प्रदर्शन को प्रशासन और श्रम विभाग की सक्रिय पहल से शांतिपूर्वक समाप्त करा दिया गया है। उन्होंने बताया कि जिलाधिकारी मयूर दीक्षित के निर्देश पर वरिष्ठ अधिकारियों को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया था। श्रम विभाग ने श्रमिकों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के प्रतिनिधियों के साथ लगातार वार्ता कर समस्याओं का समाधान कराया। साथ ही राज्य सरकार की ओर से जारी न्यूनतम वेतन और महंगाई भत्ते संबंधी नियमों की जानकारी देकर श्रमिकों के बीच फैले भ्रम और अफवाहों को दूर किया गया। सहायक श्रम आयुक्त ने बताया कि श्रम विभाग ने विभिन्न क्षेत्रों में संवाद कार्यक्रम आयोजित कर श्रमिकों को जागरूक किया। इसके अलावा प्रेस नोट और वीडियो फुटेज जारी कर इंजीनियरिंग एवं नॉन-इंजीनियरिंग उद्योगों में लागू वेतनमान और महंगाई भत्ते की विस्तृत जानकारी भी दी गई।

धीरेंद्र प्रताप उत्तराखंडी जंग बंधु सम्मान से सम्मानित

उत्तरकाशी(आरएनएस)। उत्तराखंड राज्य निर्माण आंदोलन के वरिष्ठ नेता एवं कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष धीरेंद्र प्रताप को यमुना घाटी में आंदोलनकारियों की ओर से उत्तराखंडी जंग बंधु सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान चिह्नित राज्य आंदोलनकारी संयुक्त समिति के सम्मेलन में जिलाध्यक्ष पृथ्वीराज कपूर की अध्यक्षता में दिया गया। सम्मेलन में यमुना और गंगा घाटी से पहुंचे आंदोलनकारियों ने ढोल-दमाऊ और नगाड़ों के साथ धीरेंद्र प्रताप का स्वागत किया। बड़कोट में जुलूस निकालकर उनके समर्थन में नारे भी लगाए गए। धीरेंद्र प्रताप ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य आंदोलनकारियों को आज भी उनका पूरा सम्मान और अधिकार नहीं मिल पाया है। सम्मेलन में हरिकृष्ण भट्ट, सावित्री नेगी, कमला पांडे, डॉ. विजेंद्र पोखरियाल, महेश जोशी, गणेश रमोला, वासूदेव डिमरी और मनीष डिमरी सहित कई लोग मौजूद थे।

धराली के श्रीकंठ के बेस कैंप व हर्षिल में स्थापित होगा अर्ली वार्निंग सिस्टम

उत्तरकाशी(आरएनएस)। आपदा प्रभावित धराली और हर्षिल में जिला प्रशासन की ओर से अर्ली वार्निंग सिस्टम स्थापित किया जाएगा। इसके लिए प्रशासन की ओर से शासन को प्रस्ताव तैयार कर भेजा गया है।

बीते वर्ष इन क्षेत्रों में आई आपदा की तबाही के बाद इस सिस्टम को लगाने की मांग की गई थी। इसके साथ ही जनपद के छह विकासखंडों के नौ स्थानों में आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से स्वचलित मौसम केंद्रों की स्थापना की जाएगी। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के तहत इनके लिए स्थल भी चयनित किए गए हैं। गत वर्ष अगस्त माह में धराली की खीर गंगा और हर्षिल में तेलगाड़ में आई आपदा के दौरान कई लोग, भवन आदि जमींदोज हो गए थे। उस दौरान नदियों में अचानक आई तबाही ने लोगों को संभलने का मौका नहीं दिया था। इसके बाद विशेषज्ञों ने भी इन क्षेत्रों में अर्ली वार्निंग सिस्टम लगाने की सलाह दी थी।

इस पर जिला प्रशासन की ओर से प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजा है। जिलाधिकारी प्रशांत आर्य ने कहा कि धराली में श्रीकंठ चोटी के निचले इलाकों व हर्षिल में भी ऊंचाई वाले क्षेत्रों में यह स्थापित किया जाएगा। कहा कि जल्द ही शासन से स्वीकृति मिलने पर इस पर कार्रवाई की जाएगी। साथ ही गंगोत्री क्षेत्र में इस पर विचार किया जा रहा है। प्रयास है कि आगामी मानसून से पहले अर्ली वार्निंग सिस्टम को स्थापित किया जाए। इससे आने वाले समय में नदियों के बढ़ते जलस्तर सहित आसपास की भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी भी मिल पाएगी।

इसके साथ ही आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से जनपद के राजकीय इंटर कॉलेज मुस्टिकसौड़, राजकीय प्राथमिक विद्यालय सौरा, जीएमवीएन गेस्ट हाउस सांकरी, केंद्रीय जल आयोग कार्यालय कुथनौर, रेंज कार्यालय जरमोला, राड़ी टॉप, धौंतरी तहसील कार्यालय, वन विश्राम गृह भटवाड़ी और अगोड़ा में स्वचलित मौसम केंद्र स्थापित किए जाएंगे। इससे पहल जनपद में 18 स्थानों में स्वचलित मौसम केंद्र व वर्षामापी यंत्र लगाए गए हैं।

गर्मी में घमौरियों से हो रहे हैं परेशान, 5 मिनट में इन चीजों से करें इलाज

गर्मी के मौसम में बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को घमौरियां बहुत ही कष्ट पहुंचाती हैं. इस मौसम में न सिर्फ कई तरह की बीमारियां पैदा होती हैं बल्कि शरीर में घमौरियों की वजह से तेज खुजली भी होती है. घमौरी से शरीर खुजलाने के कारण जलन और इचिंग भी बढ़ जाती है. इससे शरीर पर रैशेज भी हो जाते हैं. त्वचा संबंधी यह दिक्कत यूं तो बहुत बड़ी नहीं होती लेकिन सभी को परेशान कर देती है. आप चाहें तो इसे घर पर ही कुछ आसान टिप्स की मदद से ठीक कर सकते हैं. आइए आपको बताते हैं कौन से हैं वो घरेलू नुस्खे.

मुल्तानी मिट्टी

मुल्तानी मिट्टी का इस्तेमाल लंबे समय से घमौरियों के इलाज के लिए किया जाता रहा है. यह बंद पोर्स को खोलती है और स्किन को रिफ्रेश करती है. इसे लगाने के लिए इसको गुलाब जल के साथ मिक्स करें. फिर प्रभावित जगह पर लगा कर 2० मिनट के लिए छोड़ दें. गर्मियों में इसे रोज लगाएं और जब फर्क दिखाई पड़ने लगे तो एक दिन छोड़ कर लगाना शुरू करें. जल्द ही असर नजर आएगा.

खीरा

गर्मी की वजह से स्किन पर होने वाली खुजली को खीरा लगाकर आसानी से ठीक किया जा सकता है. यह त्वचा को तुरंत निखारता है और ठंडक पहुंचाता है. इसके लिए आधा खीरा लेकर उसे छीलें और पतले स्लाइस काट लें. इन्हें कुछ मिनटों के लिए फ्रिज में ठंडा करें और फिर उन्हें घमौरियों पर लगाएं.

बेकिंग सोडा

बेकिंग सोडे में एंटीबैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं. यह गर्मी और पसीने की वजह से शरीर पर पैदा होने वाले संक्रमण को रोकने में मदद करता है. 2 चम्मच बेकिंग सोडा को 1 कटोरी पानी में मिलाकर शरीर के प्रभावित क्षेत्र को साफ करें. रोजाना दिन में 2 बार ऐसा करने से लाभ मिलता है.

एलोवेरा जेल

एलोवेरा जेल में एंटीबैक्टीरियल और एंटीसेप्टिक गुण पाए जाते हैं, जो गर्मी के कारण होने वाली घमौरियों से राहत दिलाते हैं. यह खुजली के साथ लाल रंगे के रैशेज को भी दूर करता है. अगर आपको घमौरियों से बचना है तो ताजा एलोवेरा जेल लगाएं. इसे कम से कम दिन में दो बार जरूर लगाएं.

गर्मियों के मौसम में कुछ इस स्टाइल से पहनें अपनी डेनिम जैकेट

आज के समय में फैशनिस्टा की अलमारी में आपको जींस-जैकेट की एक जोड़ी न मिले, ऐसा कैसे हो सकता। बॉलीवुड एक्ट्रेसेस से लेकर फैशन दीवास तक सब डेनिम जैकेट्स को लेकर पागल हैं। लेकिन सबसे बड़ी परेशानी जो अधिकतर देखने को मिलती है, वह यह कि गर्मियों के मौसम में इसे कैसे कैरी किया जाए? जिससे हमें आरामदायक और स्टाइलिश लुक मिल सके।

कुछ यूं करें स्टाइलिंग

शायद हम में से ज्यादातर लोग आज भी डेनिम की क्वालिटी के बारे में ज्यादा नहीं जानते होंगे लेकिन उन्हें बता दें कि डेनिम जैकेट के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि वे एक ऐसे फैब्रिक से बनी होती है, जो न तो बहुत गर्म होती है और न ही बहुत ठंडी। ऐसे में आज हम आपको बताने जा रहे हैं वो तरीके, जिनसे आप खुद अपनी डेनिम जैकेट को स्टाइलिश लुक दे सकती हैं।

डेनिम को-ओर्ड

अगर आप अपने ओवरऑल लुक को डेनिम के साथ स्टाइलिंग करना चाहती हैं और आपको समझ नहीं आ रहा कि कैसे करना है, तो करीना कपूर की इस ड्रेस से स्टाइलिंग टिप्स ले सकती हैं। आप अपनी डेनिम जैकेट को स्कर्ट के साथ उसे शर्ट के रूप में पहन सकती हैं, या आप धारीदार शर्ट और डेनिम पैंट पहनकर डबल डेनिम को भी ऐड कर सकती हैं।

लेयर डेनिम

जब आपको समझ नहीं आता कि क्या पहनना है, तो आप अपनी डेनिम जैकेट को लेयर्स के साथ पहन सकती हैं। जी हां, आप चाहें तो डेनिम वेस्ट कोट के साथ डेनिम को पेयर कर सकती हैं। इससे न केवल आपको स्टाइलिश लुक मिलेगा बल्कि आप खूबसूरत अंदाज़ में खुद को सुपर कम्फर्टबल भी महसूस करा सकती हैं।

शॉर्ट ड्रेस के साथ

जब भी किसी स्टाइलिश कपड़े की बात आती है तो डेनिम जैकेट आपकी सबसे अच्छी दोस्त होती है। एक ड्रेस को स्टाइल करने के सबसे आसान और सबसे अच्छे तरीकों में से एक है- डेनिम जैकेट। जी हां, आप अपनी डेनिम जैकेट को किसी भी शॉर्ट ड्रेस या टी-शर्ट के साथ पेयर कर सकती हैं।

एथलेबिकिंग (वर्कआउट) लुक

अपने वर्कआउट लुक को एथलेबिकिंग के साथ मज़ेदार बनाने का काम केवल और केवल आपकी डेनिम जैकेट कर सकती है। अपनी हुडी और ट्रैक पैंट के साथ आप अपनी डेनिम जैकेट पहन सकती हैं। यही नहीं यह ड्रेस आपके दोस्तों के साथ कॉफी डेट या फिर आउटिंग के लिए भी मजेदार हो सकती है। (आरएनएस)

साइटिका के दर्द से राहत दिलाएंगे योगासन

आजकल हमारी बदलती जीवनशैली में कई तरह की शारीरिक परेशानियां घेरने लगी हैं। साइटिका का दर्द भी इनमें से एक है। सायटिका में पैर में असहनीय दर्द होता है।इसमें मरीज को चलने में भी परेशानी होती है। दरअसल, साइटिका एक नर्व है। जब इसमें सूजन या खिंचाव होता है, तो दर्द शुरू हो जाता है। इसी को सायटिका का दर्द कहा जाता है। इस दर्द को दूर करने के लिए कई तरह के योग आसन बताए गए हैं। इनकी मदद से साइटिका के दर्द को दूर किया जा सकता है।

भुजंगासन: इस आसन को कोबरा पोज भी कहा जाता है। यह आसन साइटिका के दर्द को दूर करने के अलावा पेट की चर्बी को भी कम करता है। इसे करने के लिए सबसे पहले पेट के बल लेट जाएं। अपने दोनों पैरों के बीच दूरी कम रखें और गहरी सांस लेते हुए अपने ऊपरी शरीर को ऊपर की ओर उठाएं। आपकी कोहनी इस दौरान शरीर के साथ सीधी रेखा में होनी चाहिए। पैरों को इस तरह स्ट्रेच करें कि आपको अधिक खिंचाव महसूस न हो। इसके अलावा अपने सिर को जितना हो सके ऊपर की तरफ उठाएं। इसे 3 से 4 बार करें।

अपानासन योग: इस आसन की शुरुआत करने के लिए समतल जमीन पर पीठ के बल लेट जाएं। इसके बाद अपने दोनों पैरों को घुटनो से मोड़ लें। फिर धीरे से सांस छोड़ते हुए दोनों घुटनो को छाती की ओर लाने का प्रयास करें। इसके बाद अपने दोनों हाथो से घुटनो को पकड़ लें। मगर ध्यान रखें कि आपके कंधे जमीन पर ही टिके हुए हों। कुछ देर इसी स्थिति में रहें। फिर गहरी सांस लेते हुए सामान्य अवस्था में आ जाएं।

अधोमुख श्वान आसन: इस आसन को करने के लिए पहले दोनों हाथ और घुटनों के बल जमीन पर लेट जाएं। इसके बाद सांस खींचते हुए अपने पैरों और हाथों के बल शरीर को उठाएं और टेबल जैसी आकृति बनाएं। अब शरीर के पिछले हिस्से को ऊपर की ओर उठाइए। इसके साथ-साथ अपने दोनों घुटनों और हाथों को भी सीधा कर लें। इस आसन के अभ्यास के दौरान कंधे और हाथ एक सीध में रहने चाहिए। पैर हिप्स की सीध में रखें। ध्यान रखें कि आपके दोनों हाथ की हाथेलियां फैली हुई हों। अब कुछ देर तक इसी अवस्था में रहें।

सुप्त पादांगुष्ठासन: यह आसन साइटिका की समस्या में बहुत आराम देता है। इसे करने के लिए सबसे पहले अपने दोनों पैरों को फैला कर लेट जाएं। अब अपने एक पैर को उठाएं। इसके बाद एक ऐसा कपड़ा लें, जो लंबाई में काफी बड़ा हो। इसके बाद इस कपड़े को अपने पैर के पंजे में डाल कर हाथो में अच्छे से पकड़ लें। अपने पैर को धीरे-धीरे स्ट्रेच करें। अब अपने घुटने को बिना मोड़े ही पैर को अपने सिर की ओर लाने का प्रयास करें। कुछ देर तक इसी अवस्था में रहें।

स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है ध्यान योग

योग में मस्तिष्क की सुरक्षा करने और उसके प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए कई तकनीकें हैं।इनमें ध्यान योग सबसे प्रभावी है, जो अधिक प्रभावी ढंग से ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है। ध्यान योग के तरीकों को समझना कठिन है।आज हम आपको इस योग तकनीक से जुड़ी महत्वपूर्ण बाते बताने जा रहे हैं, जिसके जरिए आपके लिए इसे अपनी दिनचर्या में शामिल करना आसान हो सकता है।

ध्यान योग क्या है?

ध्यान संस्कृत शब्द ध्याई से लिया गया है जिसका अर्थ सोचना है।ध्यान योग एक तरह की ध्यान प्रक्रिया है, जिसमें आप आनंद और शांति का अनुभव करते हैं।यह आपके ध्यान को जरूरी चीजों पर केंद्रित करने और विचारों को स्पष्ट रखने में मदद कर सकता है।इसके अतिरिक्त यह शरीर में आंतरिक शांति की भावना उत्पन्न करता है और मानसिक स्वास्थ्य को भी स्वस्थ रखने में सहायक है।

ध्यान योग से मिलने वाले फायदे

अगर नियमित रूप से ध्यान योग का अभ्यास किया जाए तो इससे ध्यान और एकाग्रता को बढ़ाने में मदद मिलती है।इससे अकेलेपन की भावना से भी छुटकारा मिलता है क्योंकि आप अंदर से खुद को पूर्ण महसूस करने लगते हैं।इसके अतिरिक्त यह अवसाद, तनाव और चिंता को दूर करने में मदद करता है। एक अध्ययन के अनुसार, ध्यान योग का अभ्यास करने वाले व्यक्तियों ने उच्च स्तर के विकास, आत्म-स्वीकृति और सकारात्मक संबंधों का अनुभव किया।

ध्यान योग के लिए चुनें शांत जगह

ध्यान योग करने के लिए एक ऐसी जगह चुनें, जो शोर-शराबे से मुक्त हो।अगर आप घर के किसी कमरे में इसका अभ्यास करने वाले हैं तो ध्यान रखें कि वह कमरा हवादार और कम से कम लाइट वाला होना चाहिए।साथ ही कमरे में किसी तरह की बदबू नही होनी चाहिए क्योंकि इससे योग के दौरान आपका ध्यान भटक सकता है।इसके अलावा ध्यान योग के लिए हमेशा आरामदायक योगा मैट चुनें।

मन को दबाव से न करें शांत

कई लोग ध्यान योग का अभ्यास करते समय जबरदस्ती अपने मन को शांत करने की कोशिश करते हैं और सोचते रहते हैं कि दिमाग में कोई भी विचार न आएं। हालांकि, इस तरह से और ज्यादा विचार मन में घर करने लगते हैं।ऐसे में बेहतर होगा कि आप अपने मन और दिमाग को स्वतंत्र छोड़कर सिर्फ अपनी सांस लेने और छोड़ने की प्रक्रिया पर ध्यान दें।

शब्द सामर्थ्य -039

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. तकलीफ, कष्ट, कठिनाई, परेशानी 3. सरल, सहज 6. ज्ञान प्राप्त करना, शिक्षा लेना 7. विवश, लाचार 8. अत्यधिक ठंडा, सुस्त 9. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 11. सूर्य, सूरज 13. वस्त्र आदि धारण कराना 15. अप्रसन्न, नाखुश 16. खिंचाव, आकर्षण शक्ति (उ.) 18. एक रंग, आसमानी रंग 22. सेवा-सत्कार, आवभगत 23. सर्प, सांप, लकड़ी आदि की मूर्ति बनाना।

ऊपर से नीचे

1. हृदर, उर 2. शिष्टता, भद्रता, विवेक (उ.) 3. अंततः, अंततोगत्वा 4. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 5. आवागमन, गमनागमन 7. पुरुष 8. घोड़े की तेज चाल, तेज गति की दौड़ 10. लूटपाट, डकैती 12. बबार्दी, तबाही 14. नासिका, श्वसनइंद्रीय 17. आखेटक, अरेही 19. योग्य, काबिल 20. कामदेव की पत्नी, प्रेम, आनंद 21. रात्रि, निशा।

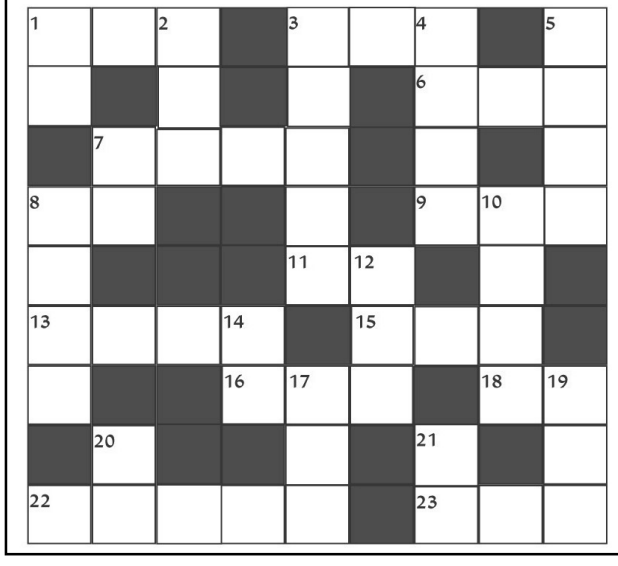

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 38 का हल

चु	स्त	■	मु	■	सं	स्था	न	■
ग	■	म	र्दा	न	गी	■	त	म
ली	प	ना	■	■	त	न	■	■
■	ना	ना	■	■	■	■	ज	■
मा	ह	■	रा	■	सा	ज	न	■
न	■	स	ह	दे	व	■	म	द
व	■	म	■	व	न	ज	■	ल
ता	क	त	व	र	■	मी	■	द
■	ल	ल	क	■	क	र	त	ल

दूरदर्शी नीतियां बन रही आधार

विकास की ओर अग्रसर उत्तराखंड

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कुशल नेतृत्व में उत्तराखंड की हाल में शुरू की गई पहलें समग्र विकास के दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। यह जहां एक ओर राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक पहचान दे रही है, वहीं उत्तराखंड को प्रगति और परिवर्तन की राह पर तेजी से आगे बढ़ा रही हैं।

राज्य के स्थानीय लोगों से बात करते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

नियुक्ति पत्र वितरीत करते मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी

"21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास। आज उत्तराखंड, इन दोनों ही स्तंभों को लगातार मजबूत कर रहा है। ये दशक उत्तराखंड का दशक होगा।"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

"प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में देवभूमि उत्तराखंड निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। तीर्थाटन एवं पर्यटन की दृष्टि से लोग यहां आयें, इसके लिए राज्य सरकार द्वारा जरूरी कदम उठाये जा रहे हैं ताकि पर्यटक शीतकाल में पर्यटन के साथ तीर्थों का भी आनन्द ले सकें।"

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

सुशासन से सामाजिक समानता और व्यापक कल्याण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी अपने कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए उत्तराखंड में सुधारों की निर्मल धारा प्रवाहित कर रहे हैं। राज्य सरकार उत्तराखंड को समानता, पारदर्शिता और अनंत अवसरों की भूमि बनाने की दिशा में सकारात्मक तरीके से आगे बढ़ रही है।

समान नागरिक संहिता: व्यक्तिगत कानूनों का एकीकरण

7 फरवरी 2024 को उत्तराखंड देश का पहला राज्य बना, जिसने समान नागरिक संहिता (UCC) लागू की। इसमें विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, गोद लेने और लिव-इन संबंधों से जुड़े कानूनों को एक ढांचे में जोड़ा गया। सिर्फ चार महीनों में मई 2025 तक 1.5 लाख से अधिक पंजीकरण हुए। ऐप, पोर्टल और गांव में बनाए गए केंद्रों की मदद से 98% गांवों से आवेदन पहुंचे। यह कानून महिलाओं को बराबरी और न्याय देता है, जबकि इसमें अनुसूचित जनजातियों की परंपराओं को संरक्षण के लिए छूट दी गई है।

एंटी-चीटिंग कानून: निष्पक्ष परीक्षाओं की गारंटी

प्रतियोगी परीक्षाओं में पारदर्शिता लाने के लिए उत्तराखंड ने सख्त एंटी-चीटिंग कानून लागू किया है। पेपर लीक, नकल या भर्ती घोटाले अब संज्ञेय और गैर-जमानती अपराध हैं। सजा में 10 साल तक की कैद, भारी जुर्माना और अवैध संपत्ति की जब्ती शामिल है। इस कदम ने युवाओं का भरोसा बहाल किया है और मेरिट आधारित भर्ती प्रणाली को मजबूती मिली है।

महिलाओं को 30% आरक्षण: सशक्तिकरण की दिशा में कदम

उत्तराखंड लोक सेवा अधिनियम, 2022 (जनवरी 2023 से लागू) के तहत राज्य की महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 30% आरक्षण दिया गया है। यह सामान्य, एससी, एसटी और ओबीसी सभी वर्गों की महिलाओं पर लागू होता है। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों वाले राज्य में यह निर्णय महिलाओं को अवसर और समृद्धि प्रदान कर रहा है।

ये सुधार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के साझा दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, जिसमें प्रगतिशील, सशक्त और सक्षम उत्तराखंड के निर्माण की झलक दिखती है, जो सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है, सुशासन को आधार बनाते हुए अपनी परंपराओं का भी सम्मान करता है। समान नागरिक संहिता (UCC) सुधार सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर नागरिकों के व्यापक कल्याण को सुनिश्चित करते हैं। निरंतर प्रयासों से राज्य में न्यायपूर्ण और संतुलित वातावरण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जनसांख्यिकी की रक्षा: जबरदस्ती धर्मांतरण पर रोक

उत्तराखंड धर्म स्वतंत्रता अधिनियम (2018, संशोधित 2022 व 2024) जबरदस्ती, धोखे से या प्रलोभन देकर धर्मांतरण को दंडनीय अपराध बनाता है। इसमें विशेष रूप से नाबालिगों, महिलाओं और एससी/एसटी समुदायों से जुड़े मामलों में 10 साल तक की कैद और भारी जुर्माने का प्रावधान है। यह कानून कमजोर वर्गों की सुरक्षा और सामाजिक सौहार्द को सुनिश्चित करता है।

भूमि कानून 2025: पर्यावरण और धरोहर की सुरक्षा

फरवरी 2025 में विधानसभा ने नया भूमि सुधार कानून पारित किया। इसके तहत बाहरी लोगों को अधिकांश जिलों (हरिद्वार और ऊधम सिंह नगर को छोड़कर) में कृषि व बागवानी भूमि खरीदने पर रोक है। खरीदारों को शपथ पत्र देना होगा और तय नियमों का पालन करना होगा। इस कानून का उद्देश्य भूमि माफियाओं पर रोक, पर्यावरण की रक्षा और जमीन स्थानीय समुदायों के पास सुरक्षित रखना है।

ये सभी सुधार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की साझा दृष्टि को दर्शाते हैं, जिसमें प्रगतिशील, सशक्त और आत्मनिर्भर उत्तराखंड की छवि झलकती है, जो सामाजिक न्याय, सुशासन और सांस्कृतिक परंपराओं का सम्मान करता है।

श्रीअन्न से समृद्धि की ओर
कृषि में आई नई क्रांति

'मंडुआ' की कीमतें बढ़ाने से लेकर विदेशी फलों की खेती को बढ़ावा देने तक राज्य की नीतियां किसानों को सशक्त बना रही हैं और ग्रामीण समृद्धि को सुनिश्चित कर रही हैं।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखंड में पारंपरिक खेती को मजबूत करने और बागवानी क्रांति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। राज्य सरकार ने बाजरा, सेब, कीवी और ड्रैगन फ्रूट की खेती को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है, जिससे पोषण सुरक्षा और किसानों की आय, दोनों में वृद्धि हो रही है।

2022 से मंडुआ (फिंगर मिलेट) को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदा जा रहा है और इसे सार्वजनिक वितरण प्रणाली, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम और आंगनवाड़ी पोषण योजनाओं में शामिल किया गया है। 2023 में लॉन्च हुई स्टेट मिलेट मिशन के तहत उत्पादन, भंडारण और जागरूकता अभियानों में तेजी आई है। इसके परिणामस्वरूप सिर्फ दो साल में मंडुआ का समर्थन मूल्य 68% बढ़ गया है।

उत्तराखंड कीवी नीति (2025–31) और ड्रैगन फ्रूट योजना (2025–28) के तहत किसानों को कीवी के लिए 70% और ड्रैगन फ्रूट के लिए 80% सब्सिडी दी जा रही है। ये पहलें किसानों को उच्च-मूल्य वाले फसलों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इसके जरिए किसान अपनी आय बढ़ाते हैं और टिकाऊ, आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाते हैं।

इन कदमों से उत्तराखंड में समृद्ध, आत्मनिर्भर और भविष्य के लिए मजबूत कृषि ढांचा तैयार हो रहा है।

आईटी और डिजिटल तकनीक आधारित सेवाओं की शुरुआत

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आधारित कई सेवाओं की शुरुआत की है। इनमें डिजिटल उत्तराखंड ऐप, सुरक्षित, स्केलेबल और सुगम्य (S3Waas) प्लटफॉर्म पर निर्मित 66 वेबसाइटें, शहरी क्षेत्रों में कचरा संग्रहण वाहनों की रीयल-टाइम ट्रैकिंग के लिए जीआईएस आधारित वेब एप्लिकेशन, बेहतर नागरिक सेवा के लिए 1905 सीएम हेल्पलाइन में इनोवेशन, अतिक्रमण निगरानी के लिए वेब आधारित एप्लिकेशन शामिल हैं। कुछ प्रमुख घोषणाएं इस प्रकार हैं:

- उत्तराखंड में भविष्य की चुनौतियों को पूरा करने के लिए नेक्स्ट-जेनरेशन डेटा सेंटर स्थापित किया जाएगा, जिसमें समर्पित डिजास्टर रिकवरी तंत्र होगा।
- राज्य में 'एआई मिशन' जल्द शुरू किया जाएगा, जिसे 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' के रूप में विकसित किया जाएगा।
- सुशासन को आगे बढ़ाते हुए राज्य में नेक्स्ट-जेनरेशन रिमोट सेंसिंग और ड्रोन एप्लिकेशन सेंटर विकसित किया जाएगा।
- सरकार राज्य में समर्पित आईटी कैडर स्थापित करने की दिशा में काम करेगी।

एमएसएमई और स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने का नया रोडमैप तैयार

नीतिगत सुधारों, वित्तीय प्रोत्साहनों और संस्थागत सहयोग के साथ उत्तराखंड सरकार इनके लिए मजबूत इकोलॉजी तैयार कर रही है।

उत्तराखंड सरकार ने सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र को सशक्त बनाने के लिए व्यापक कार्ययोजना शुरू की है। इसका उद्देश्य राज्य को स्टार्टअप्स, हरित उद्योगों और उच्च-गुणवत्ता वाले स्थानीय उत्पादों का वैश्विक हब बनाना है। नई एमएसएमई नीति टिकाऊ, समावेशी और रोजगार सृजित करने वाले उद्यमों पर जोर देती है। साथ ही, निवेशकों के लिए ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को सुनिश्चित करती है।

राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। ये न केवल रोजगार के अवसर सृजित करते हैं, बल्कि मूल्यवर्धित उत्पाद भी बनाते हैं। सरकार के नए फोकस के तहत स्थानीय कच्चे माल का उपयोग करने वाले स्टार्टअप्स को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही, नवीकरणीय और हरित ऊर्जा आधारित उद्यमों को प्रोत्साहित किया जा रहा है और प्रदूषण-मुक्त टिकाऊ उद्योगों का विकास किया जा रहा है। इन प्रयासों से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, राज्य की जीडीपी को मजबूती मिलेगी, निवेश आकर्षित होगा और समावेशी विकास को बल मिलेगा।

नीतिगत प्रोत्साहन और कार्ययोजना

राज्य की नीति नए और मौजूदा दोनों उद्यमों को मजबूत बनाने पर केंद्रित है। मौजूदा औद्योगिक इकाइयों में तकनीकी को बेहतर बनाकर प्रतिस्पर्धात्मकता और उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा रही है। इसके साथ ही, पूंजी और बाजार तक आसान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है। निवेश आकर्षित करने और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन लागू किए जा रहे हैं।

सरकार वन डिस्ट्रिक्ट, टू प्रोडक्ट (ओडीटीपी) योजना और जियोग्राफिकल इंडिकेशन (जीआई) टैग को भी बढ़ावा दे रही है, ताकि उत्तराखंड के विशिष्ट उत्पादों को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पहचान मिले। इसके अलावा, राज्य की नीतियां राष्ट्रीय कार्यक्रमों जैसे स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया, मेक इन इंडिया और मुद्रा योजना से जोड़ी जा रही हैं, ताकि मेक इन उत्तराखंड ब्रांड को व्यापक पहचान मिल सके।

समावेशी और टिकाऊ विकास

सरकार का लक्ष्य है कि एमएसएमई सेक्टर का विकास समावेशी तरीके से हो। इसके लिए महिला उद्यमियों, अनुसूचित जाति व जनजाति समुदाय व विशेष क्षमताओं वाले उद्यमियों को सहायता दी जा रही है। इन समूहों को अपने कारोबार बढ़ाने और नए अवसरों तक पहुंच दिलाने के लिए अतिरिक्त वित्तीय प्रोत्साहन, सब्सिडी और समर्पित हेल्पलाइन सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

संस्थागत सहयोग की मजबूती

जिला उद्योग केंद्रों (डीआईसी) का आधुनिकीकरण किया जा रहा है, ताकि उद्यमियों को तकनीकी सुविधाएं, प्रोजेक्ट तैयारी और परामर्श सेवाएं मिल सकें। सिंगल विंडो क्लियरेंस सिस्टम को और सरल बनाया जा रहा है, ताकि उद्योगों को तेजी से अनुमोदन मिल सके। साथ ही, निदेशालय स्तर पर एक निवेश के प्रोत्साहन और सुविधा केंद्र स्थापित किए गए हैं, जो निवेशकों और कारोबारियों के लिए वन-स्टॉप सॉल्यूशन का काम करेंगे। महिलाओं और दिव्यांग उद्यमियों के लिए विशेष हेल्पलाइन सेवाएं भी शुरू की जा रही हैं।

विपणन और वैश्विक पहुंच

उत्तराखंड हथकरघा और हस्तशिल्प विकास परिषद राज्य के उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बढ़ावा देने के लिए सक्रिय है। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन पोर्टल्स का उपयोग बढ़ाया जा रहा है, ताकि स्थानीय उद्यमों को वैश्विक पहचान मिले। इस पहल का उद्देश्य है कि नवाचार को प्रोत्साहित करते हुए स्थानीय परंपराओं को संरक्षित रखा जाए और उत्तराखंड को टिकाऊ व समावेशी उद्योगों का हब बनाया जाए।

वित्तीय प्रोत्साहन और सब्सिडी

नई एमएसएमई नीति के अंतर्गत उद्यमों को ये वित्तीय लाभ प्रदान किए जा रहे हैं:

- श्रेणी के आधार पर 100% तक स्टाम्प ड्यूटी की वापसी
- संयंत्र और मशीनरी पर 50% तक की पूंजी सब्सिडी
- प्राथमिक श्रेणियों के लिए 10 लाख रुपये तक की अतिरिक्त पूंजी निवेश सब्सिडी
- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिला और दिव्यांग उद्यमियों को 5% अतिरिक्त सब्सिडी
- श्रेणी के अनुसार 21 लाख रुपये तक की ब्याज सब्सिडी वापसी
- 500 किलोवाट तक के स्वीकृत लोड वाले नए उद्यमों के लिए पांच वर्षों तक बिजली शुल्क की वापसी
- जीरो डिफेक्ट जीरो इफेक्ट (जेडईडी) सर्टिफिकेशन के तहत मान्यता
- स्वर्ण, रजत और कांस्य श्रेणियों में प्रमाणित इकाइयों को 75,000 रुपये प्रति इकाई मौद्रिक पुरस्कार

पर्यटन और रोजगार को बल

उत्तराखंड में सड़कों का कायाकल्प पर्यटन क्षेत्र के लिए अहम साबित हुआ है। होमस्टे, रिवर वैली कैम्पिंग, एडवेंचर ऑपरेटर्स और चारधाम यात्रा सेवाओं जैसे व्यवसाय लंबे समय तक संचालित हो पा रहे हैं और उन्हें कम लॉजिस्टिक जोखिम का सामना करना पड़ रहा है। इनका सीधा फायदा उत्तराखंड के नागरिकों को मिल रहा है।

उत्तराखंड में ई-वे की वजह से वीकेंड विजिट्स भी बढ़ी हैं, जिससे ऋषिकेश और हरिद्वार जैसे शहरों को अतिरिक्त आय हो रही है। बेहतर सड़क नेटवर्क ने कम-जाने पहचाने स्थलों को भी पर्यटन मानचित्र पर ला दिया है, जिससे इको-टूरिज्म और एडवेंचर टूरिज्म को प्रोत्साहन मिल रहा है और स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है। कुल मिलाकर उत्तराखंड का समग्र विकास हो रहा है, जिसमें नागरिकों का हित सर्वोपरि है।

धामी सरकार के प्रयासों से उत्तराखंड की स्वास्थ्य सेवाओं को मिला विस्तार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वस्थ भारत के विजन के अनुरूप उत्तराखंड में स्वास्थ्य क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। सभी के लिए सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए केंद्रित निवेश और सुधार किए जा रहे हैं। पिछले चार वर्षों में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राज्य की स्वास्थ्य के बुनियादी ढ़ाचे को उल्लेखनीय रूप से सुदृढ़ किया है।

2021 में अल्मोड़ा और 2024 में हरिद्वार में दो नए सरकारी मेडिकल कॉलेज शुरू किए जा चुके हैं। इस विस्तार से 200 नई एमबीबीएस सीटें जुड़ी हैं, जिससे राज्य में कुल सीटों की संख्या बढ़कर 625 हो गई है। इसके अतिरिक्त, पिथौरागढ़ और रुद्रपुर में नए कॉलेज स्थापित करने की तैयारी है, जहां संबद्ध अस्पताल पहले से ही कार्यरत हैं। किच्छा में एम्स (सैटेलाइट सेंटर) पर भी काम प्रगति पर है, जबकि एम्स ऋषिकेश ने राज्य की पहली एयर एंबुलेंस सेवा शुरू की है। इसके अलावा, हर्रावाला (देहरादून) में 300 बेड का कैंसर अस्पताल भी तैयार कर लिया गया है।

अटल आयुष्मान उत्तराखंड योजना एक अहम कार्यक्रम के रूप में उभरी है, जिसके तहत करीब 60 लाख लाभार्थियों को गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए 5 लाख रुपये तक का कैशलेस उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है। यह योजना देशभर के 30,000 से अधिक अस्पतालों में मान्य है।

जिला और तहसील स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने का लक्ष्य न केवल स्थानीय स्तर पर बेहतर उपचार उपलब्ध कराना है, बल्कि उत्तराखंड के युवाओं के लिए नए रोजगार और करियर के सुनहरे अवसर भी सृजित करना है।

धरासू-जोगत मार्ग पर डामरीकरण की गुणवत्ता पर उठे सवाल

उत्तरकाशी(आरएनएस)। विकासखंड के तहत धरासू-जोगत मोटर मार्ग पर हाल ही में हुए डामरीकरण कार्य की गुणवत्ता को लेकर स्थानीय स्तर पर सवाल उठने लगे हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि विभाग करोड़ों की लागत से सड़कों का डामरीकरण तो कर रहा है लेकिन मार्ग पर मौजूद संवेदनशील और खतरनाक स्थलों के स्थायी समाधान की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत करीब एक सप्ताह पूर्व मोटर मार्ग पर डामरीकरण का कार्य कराया गया था। स्थानीय लोगों का कहना है कि नेरी-तुल्याड़ा क्षेत्र के समीप बना बड़ा डेंजर जोन आज भी राहगीरों, ग्रामीणों और वाहन चालकों के लिए खतरा बना है। धरासू पुल से लेकर देवीसौड़ तक सड़क पर डामरीकरण का कार्य किया गया है लेकिन बरसात को देखते हुए ग्रामीणों ने डेंजर जोन के स्थायी उपचार की मांग तेज कर दी है। कनिष्ठ प्रमुख भानुप्रिया थपलियाल, बीजेपी नेता अमित सकलानी ने कहा कि केवल सड़क पर डामर बिछा देने से समस्या का समाधान नहीं होगा जब तक भूस्खलन प्रभावित और जोखिम वाले क्षेत्रों का वैज्ञानिक तरीके से ट्रीटमेंट नहीं किया जाता। ग्रामीणों ने संबंधित विभाग से निर्माण कार्य की गुणवत्ता की जांच कराने के साथ-साथ नेरी-तुल्याड़ा डेंजर जोन के स्थायी समाधान की मांग की है। पीएमजीएसवाई चिन्यालीसौड़ के ईई हरीश बिजल्वाण ने बताया कि दिकोली -नेरी और देवीसौड सड़क साढ़े सात किमी लंबाई में लगभग आठ करोड़ से कार्य पूरा हो गया है।

बेस अस्पताल में तैनात किए गए दो मेडिकल अफसर

कोटद्वार(आरएनएस)। राजकीय बेस अस्पताल में दो मेडिकल अफसरों की तैनाती की गई है। वहीं, वरिष्ठ महिला चिकित्सक की संविदा पर तैनाती की गई है। अब विशेष परिस्थिति में ही विशेषज्ञ चिकित्सकों को इमरजेंसी वार्ड में लगाया जाएगा। चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की ओर से एमबीबीएस चिकित्सक डॉ. विवेक बड़थ्वाल व डॉ. विवेक गर्ग की तैनाती बतौर मेडिकल अफसर राजकीय बेस अस्पताल कोटद्वार में की गई है। इनमें डॉ. विवेक बड़थ्वाल ने ड्यूटी ज्वाइन करते हुए सोमवार को इमरजेंसी वार्ड में मरीजों के स्वास्थ्य की जांच की। अब तक अस्पताल में चार मेडिकल अफसर डॉ. कोमल, डॉ. हिमांशु, डॉ. नितिन, डॉ. मयंक कार्यरत थे। मात्र चार मेडिकल अफसर होने के कारण आए दिन विशेषज्ञ चिकित्सकों को इमरजेंसी वार्ड में ड्यूटी पर लगाना पड़ रहा था। अब बेस अस्पताल में छह मेडिकल अफसर होने से संभव है कि विशेषज्ञ चिकित्सकों की ड्यूटी इमरजेंसी वार्ड में नहीं लगे और उनकी ओपीडी पूरी क्षमता के साथ संचालित हो सके। वहीं, हाल ही में सेवानिवृत्त हुई महिला चिकित्सक डॉ. भावना अग्रवाल को संविदा पर तैनात किया गया है। अस्पताल के प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक डॉ. विजय सिंह ने मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं देने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं।

सू- दोकू क्र.039

	9			2				1
		5	1				3	
7				9		8		5
	8		3		7		5	
2		7				1		3
	4			1			8	
6		2			9			
	5		7			3		
		8		5			6	7

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.38का हल

7	8	2	6	3	1	4	5	9
6	4	1	8	5	9	2	7	3
9	3	5	4	7	2		1	8
2	6	3	1	9	7	5	8	4
5	7	8	3	6	4	1	9	2
1	9	4	5	2	8	7	3	6
4	5	7	2	8	3	9	6	1
3	1	6	9	4	5	8	2	7
8	2	9	7	1	6	3	4	5

कुंभ मेला 2027 : श्रद्धालुओं को मिलेंगी अत्याधुनिक एवं निर्बाध संचार सुविधाएं

हरिद्वार(आरएनएस)। कुंभ मेला 2027 में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को निर्बाध एवं अत्याधुनिक संचार सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए मेला प्रशासन ने अभी से व्यापक तैयारियां शुरू कर दी हैं। 14 जनवरी से 2० अप्रैल 2027 तक हरिद्वार में आयोजित होने वाले विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक समागम के दौरान मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट सेवाओं को मजबूत बनाने हेतु दूरसंचार विभाग तथा प्रमुख मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों के सहयोग से विशेष कार्ययोजना पर तेजी से काम किया जा रहा है। कुंभ मेला क्षेत्र में स्थायी सेल्युलर टावरों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ बड़ी संख्या में सेल ऑन व्हील तथा स्मॉल सेल टावर स्थापित किए जाएंगे, ताकि भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में भी श्रद्धालुओं को निर्बाध मोबाइल एवं इंटरनेट सेवाएं उपलब्ध हो सकें।

मेलाधिकारी सोनिका ने इस सिलसिले में दूरसंचार विभाग एवं मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों के साथ बैठक कर कुंभ मेला 2027 के दौरान संभावित भारी भीड़ को देखते हुए संचार सेवाओं की क्षमता वृद्धि एवं सुचारू संचालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पूर्व के कुंभ मेलों के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए इस बार संचार व्यवस्थाओं को और अधिक सुदृढ़, आधुनिक एवं व्यवस्थित बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि कुंभ नगरी के सभी सेक्टरों में पर्याप्त संख्या में अस्थायी मोबाइल टावर स्थापित किए जाएंगे तथा सभी आवश्यक तकनीकी व्यवस्थाएं समयबद्ध ढंग से पूरी की जाएंगी। इसके लिए मेला प्रशासन एवं दूरसंचार विभाग की संयुक्त टीम संभावित स्थलों का निरीक्षण कर उपयुक्त स्थानों का चयन करेगी।

मेलाधिकारी ने मेला प्रशासन के अधिकारियों को निर्देश दिए कि कुंभ मेला क्षेत्र के सभी सेक्टरों से संबंधित बेसलाइन डाटा एवं संभावित भीड़ का विस्तृत विवरण एक सप्ताह के भीतर दूरसंचार विभाग को उपलब्ध कराया जाए, ताकि उसी के आधार पर संचार सेवाओं की प्रभावी कार्ययोजना तैयार की जा सके। मोबाइल टावरों की स्थापना एवं अन्य तकनीकी कार्यों में बेहतर समन्वय सुनिश्चित करने के लिए अपर मेलाधिकारी एवं अपर पुलिस अधीक्षक (संचार) को जिम्मेदारी सौंपते हुए मेलाधिकारी ने कहा कि कुंभ मेला के दौरान श्रद्धालुओं को उत्कृष्ट संचार सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु दूरसंचार विभाग एवं टेलीकॉम कंपनियों को हर संभव सहयोग प्रदान किया जाएगा।

दूरसंचार विभाग के अपर महानिदेशक अमित रावत ने बताया कि मेला प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले बेसलाइन डाटा एवं संयुक्त निरीक्षण के आधार पर आगामी 1० जून तक विस्तृत दूरसंचार योजना तैयार कर प्रस्तुत कर दी जाएगी।

अधिकारियों ने बताया कि कुंभ क्षेत्र में बेहतर नेटवर्क व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए तीन प्रमुख स्तरों पर कार्य किया जाएगा। इसके अंतर्गत स्थायी मोबाइल टावरों का उन्नयन एवं विस्तार, भीड़भाड़ एवं दूरस्थ क्षेत्रों में सेल ऑन व्हील टावरों की स्थापना तथा भवनों एवं खंभों पर बड़े पैमाने पर स्मॉल सेल उपकरण लगाए जाएंगे। एक स्मॉल सेल उपकरण लगभग 2०० मीटर के दायरे में बेहतर दूरसंचार सेवाएं प्रदान करने में सक्षम होगा।

बैठक में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (कुंभ मेला) आयुष अग्रवाल, अपर मेला अधिकारी दयानंद सरस्वती, अपर पुलिस अधीक्षक (संचार) विपिन कुमार, पुलिस उपाधीक्षक (कुंभ मेला) बिपेन्द्र सिंह, डीजीएम बीएसएनएल मुकेश कुमार गुप्ता, उप मेलाधिकारी मनजीत सिंह सहित मोबाईल सेवा प्रदाता कंपनी- रिलायंस जियो, भारती एयरटेल, वोडाफोन आइडिया, इंडस टावर्स और आईटीडीए के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

पिथौरागढ़ में पांचवां कुमाउनी भाषा सम्मेलन जून में होगा

पिथौरागढ़(आरएनएस)। नगर में आदलि कुशलि कुमाउनी मासिक पत्रिका की ओर से पांचवां कुमाउनी भाषा सम्मेलन आगामी जून माह में होगा। नगर निगम सभागार में मुख्य संरक्षक डॉ. अशोक कुमार पंत की अध्यक्षता में सम्मेलन की तैयारी को लेकर बैठक हुई। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि कुमाउनी के संरक्षण और संवर्धन के लिए बीते चार वर्षों से आदलि कुशलि कुमाउनी भाषा सम्मेलन का आयोज कर रहा है। इस वर्ष आगामी 21 व 22 जून को कुमाउनी भाषा सम्मेलन प्रस्तावित है। बैठक में सम्मेलन की तैयारी को लेकर लोगों को जिम्मेदारी भी सौपी गई।

2० वर्षों से खंडहर पड़े कुली शेड का पुनर्निर्माण शुरू

कोटद्वार(आरएनएस)। लैंसडौन में कामगारों के रहने के लिए कुली शेड का पुनर्निर्माण शुरू हो गया है। कुली शेड 2० वर्षों से खंडहर बना पड़ा था। छावनी परिषद के अध्यक्ष व मुख्य अधिशासी अधिकारी ने पुनर्निर्माण प्रक्रिया शुरू करवाई है। वर्ष 1936 में ब्रिटिश सरकार द्वारा लैंसडौन में कामगारों को रहने का स्थान देने के लिए कुली शेड का निर्माण कराया गया था जिसमें आठ कमरे थे। इनमें लगभग 6० से 7० मजदूरों को रहने के लिए छत मिली थी। वर्ष 199० से जर्जर हाल हो चुके कुली शेड में तीन परिवारों के 15 लोग रह रहे थे। वर्ष 2००2 में छावनी परिषद ने खंडहर घोषित करते हुए कुली शेड को खाली करवा लिया था। श्रमिकों को रहने के लिए छत नहीं मिलने पर लैंसडौन से उनका पलायन शुरू हो गया था। कुछ वर्षों से लैंसडौन में श्रमिकों का अकाल हो गया था। कुली शेड के पुनर्निर्माण की मांग लगातार की जा रही थी। इस संबंध में स्थानीय नागरिक छावनी अध्यक्ष व छावनी परिषद के सीईओ को ज्ञापन देकर कुली शेड के पुनर्निर्माण की मांग करते आ रहे थे। छावनी बोर्ड अध्यक्ष ब्रिगेडियर विनोद सिंह नेगी व बोर्ड सचिव हर्षित राज ने कुली शेड के पुनर्निर्माण को प्राथमिकता देते हुए इसके नए सिरे से निर्माण का प्रस्ताव पारित किया। छावनी परिषद के जेई आनंद दास ने बताया कि कुली शेड के नए सिरे से निर्माण के लिए बोर्ड ने पिछले दिनों प्रस्ताव पारित किया है। इसके पुनर्निर्माण का कार्य शुरू हो गया है।

वनाग्नि रोकथाम और जनजागरूकता को लेकर हवालबाग में वनाग्नि चौपाल आयोजित

अल्मोड़ा(आरएनएस)। हवालबाग विकासखंड में आरक्षित, पंचायत और सिविल वनों में वनाग्नि प्रबंधन तथा जनजागरूकता को लेकर वनाग्नि चौपाल कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें विकासखंड और ग्राम स्तरीय वनाग्नि समितियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। विकासखंड सभागार में आयोजित कार्यशाला में वनाग्नि रोकथाम, जलवायु परिवर्तन और मानव-वन्यजीव संघर्ष जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए सहायक नोडल अधिकारी वनाग्नि अल्मोड़ा एवं मुख्य प्रशिक्षक गजेंद्र पाठक ने कहा कि वर्तमान और भविष्य की परिस्थितियों का आकलन करते हुए जंगलों को बचाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बदलती परिस्थितियों का असर पर्यावरण और जीवनशैली दोनों पर पड़ा है। उन्होंने जंगलों के अनियंत्रित दोहन, वनाग्नि, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापवृद्धि को पर्यावरणीय संकट का प्रमुख कारण बताया।

गजेंद्र पाठक ने कहा कि जंगलों में आग लगने से धरती की नमी कम हो रही है और जलस्तर लगातार नीचे जा रहा है। उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन, वनों की कटाई, जीवाश्म ईंधन के उपयोग, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से होने वाले नुकसान पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जंगलों को बचाना केवल वन विभाग की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसके लिए जनसहभागिता जरूरी है। ब्लॉक प्रमुख हिमानी कुंडू ने कहा कि वनाग्नि चौपाल जैसे कार्यक्रमों से लोगों में जागरूकता बढ़ेगी और जंगलों को बचाने के प्रयासों को मजबूती मिलेगी। उन्होंने इसे सराहनीय पहल बताया। कार्यक्रम में बीडीओ एस एस दरियाल ने वनाग्नि चौपाल को सार्थक बताते हुए विकासखंड के सभी ग्राम पंचायत विकास अधिकारियों और ग्राम विकास अधिकारियों के माध्यम से प्रत्येक ग्राम सभा में वनाग्नि चौपाल आयोजित किए जाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में एबीडीओ रमेश कनवाल, डॉ. रंजन तिवारी, जिला पंचायत सदस्य कुंदन राम, प्रधान संगठन महामंत्री विनोद जोशी, देवेंद्र मेहरा, वन क्षेत्राधिकारी मोहन राम आर्य, मनोज लोहनी, वन विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, अग्निशमन, पंचायतीराज, मनरेगा, रीप, एनआरएलएम आदि विभागों के कर्मचारी, ग्राम प्रधान और हवालबाग इंटर कॉलेज के छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री धामी ने पूर्व मुख्यमंत्री खंडूड़ी के पार्थिव शरीर को कंधा देकर दी अंतिम विदाई

कार्यालय प्रतिनिधि

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बुधवार को बलवीर रोड, देहरादून स्थित भाजपा प्रदेश कार्यालय में पूर्व मुख्यमंत्री मेजर जनरल भुवन चंद्र खंडूड़ी (सेवानिवृत्त) के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित कर उन्हें नम आंखों से विदाई दी। मुख्यमंत्री ने पार्थिव शरीर को कंधा देकर अंतिम विदाई दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मेजर जनरल भुवन चंद्र खंडूड़ी जी का संपूर्ण जीवन अनुशासन, सादगी, ईमानदारी और राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित रहा। उन्होंने उत्तराखंड के विकास एवं जनसेवा में जो योगदान दिया, उसे यह प्रदेश सदैव याद रखेगा। मुख्यमंत्री ने उनके निधन को राज्य के लिए अपूरणीय क्षति बताया। इस दौरान विधानसभा अध्यक्ष श्रीमती रितु खंडूरी भूषण, महामंत्री (संगठन) अजेय कुमार, कैबिनेट मंत्री डॉ धन सिंह रावत, खजान दास, पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत, मेयर सौरभ थपलियाल, महानगर अध्यक्ष सिद्धार्थ अग्रवाल, एवं अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

फैक्ट्री की टीन शैड तोडकर बिजली की तारें चोरी

संवाददाता

देहरादून। चोरों ने फैक्ट्री की टीन शैड तोडकर वहां से बिजली की तारें चोरी कर ली। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार शंकरपुर निवासी लक्की ने सहसपुर थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि चोरों ने उसकी फैक्ट्री की टीन शैड उखाडकर वहां से बिजली की तारें चोरी कर मशीनों को क्षतिग्रस्त कर दिया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

'सपनों' की नीलामी पर सिस्टम...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

युवाओं का दर्द और भी गहरा है। सीमित संसाधनों के बीच वर्षों तक तैयारी करने वाले युवाओं को जब पेपर लीक या भ्रष्टाचार की खबरें सुनाई देती हैं तो उनके भीतर व्यवस्था के प्रति निराशा और गुस्सा दोनों बढ़ता है। कई युवा इसे पलायन और टूटते भरोसे की सबसे बड़ी वजह भी मानने लगे हैं।

2027 का चुनाव केवल सड़कों, बिजली और विकास योजनाओं तक सीमित नहीं रहने वाला। इस बार युवाओं का सवाल सीधा होगाकृनौकरी मिलेगी या सिर्फ आश्वासन? राजनीतिक दलों के भाषणों में राष्ट्रवाद, विकास और योजनाओं के साथ-साथ भर्ती घोटालों और भ्रष्टाचार का मुद्दा भी पूरी ताकत से गूंजेगा।

उत्तराखंड की राजनीति में यह पहली बार नहीं है जब युवाओं का आक्रोश सत्ता के लिए चुनौती बना हो, लेकिन इस बार मामला केवल बेरोजगारी का नहीं, बल्कि भरोसे के टूटने का भी है। और लोकतंत्र में जब भरोसा टूटता है, तब चुनाव केवल सत्ता बदलने का नहीं, व्यवस्था को जवाब देने का माध्यम बन जाता है।

कभी 'गुस्ताखियों' का इलाज थी...

◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

यह तरीका कठोर लग सकता है, लेकिन उस दौर के सामाजिक और पारिवारिक जीवन में इसे सामान्य माना जाता था। पहाड़ का जीवन संघर्षों से भरा था। खेत, पशु, पानी और जंगल के बीच जीने वाले परिवारों में बच्चों को जल्दी जिम्मेदार बनाना जरूरी समझा जाता था। शायद इसी वजह से अनुशासन के तरीके भी उतने ही सख्त थे। आज गांव बदल रहे हैं। कच्चे आंगन पक्के हो गए हैं, जंगलों की राहें सूनी पड़ रही हैं और बच्चों के खेल मोबाइल में सिमटते जा रहे हैं। नई पीढ़ी शायद कंडाली की छपाक का मतलब भी ठीक से न समझ पाए। लेकिन पहाड़ के बुजुर्गों की यादों में यह शब्द आज भी एक पूरा बचपन जिंदा कर देता है,कृजहां दर्द भी अपना था और अनुशासन भी देसी।

'तिरंगे में लिपटा एक युग'...

◀◀ पृष्ठ 1 का शेष

आएंगी, नए चेहरे भी उभरेंगे, लेकिन पहाड़ की राजनीति में ईमानदारी, सादगी और अनुशासन की चर्चा जब भी होगी, जनरल खंडूड़ी का नाम उसी सम्मान के साथ लिया जाएगा जैसे आज उनकी अंतिम यात्रा में हर जुबान पर था। गंगा मां की गोद में विलीन हुए इस पहाड़ के गौरव को पूरा देश और उत्तराखंड हमेशा कृतज्ञ भाव से याद रखेगा।

अंतिम सलाम, मेजर जनरल! आपकी कमी हमेशा खलेगी।

छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा, साइबर अपराध व यातायात नियमों के प्रति किया जागरूक

संवाददाता

टिहरी। पुलिस ने छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा, साइबर अपराध , यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया।

आज यहां वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक टिहरी गढ़वाल श्रीमती श्वेता चौबे की पहल एवं निर्देशन में जनपद में चलाए जा रहे जन-जागरूकता अभियान के क्रम में, अपर पुलिस अधीक्षक टिहरी गढ़वाल के निर्देशन तथा क्षेत्राधिकारी नरेंद्रनगर के पर्यवेक्षण में महिला उपनिरीक्षक सुषमा रावत, थाना कीर्तिनगर द्वारा राजकीय इंटर कॉलेज न्यूली में छात्र-छात्राओं हेतु विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्र-छात्राओं को महिला सुरक्षा, साइबर अपराधों से बचाव एवं यातायात नियमों के प्रति जागरूक करना रहा। कार्यक्रम के दौरान पुलिस टीम द्वारा महिला अपराधों एवं महिलाओं की सुरक्षा संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हुए महिला हेल्पलाइन नंबरों एवं कानूनी सहायता के बारे में अवगत कराया गया। छात्र-छात्राओं को "गुड टच एवं बैड टच" के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए बच्चों की सुरक्षा एवं सतर्कता के प्रति जागरूक किया गया। साथ ही साइबर अपराधों जैसे ऑनलाइन ठगी, फर्जी लिंक, फ्रॉड, सोशल मीडिया हैकिंग एवं डिजिटल अरेस्ट आदि से बचाव के उपाय बताए गए। साइबर ठगी होने की स्थिति में तत्काल 1930 हेल्पलाइन एवं साइबर पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराने की प्रक्रिया भी समझाई गई। इसके अतिरिक्त छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों का पालन करने, हेलमेट एवं सीट बेल्ट का प्रयोग करने, सड़क सुरक्षा के महत्व को समझने तथा नाबालिगों द्वारा वाहन न चलाने हेतु जागरूक किया गया।

सोशल मीडिया का सुरक्षित एवं जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग करने के लिए भी प्रेरित किया गया। कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों का पुलिस अधिकारियों द्वारा सरल एवं प्रभावी ढंग से उत्तर दिया गया। विद्यालय प्रशासन एवं उपस्थित छात्र-छात्राओं ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए इसे अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक बताया। जन-जागरूकता कार्यक्रम में विद्यालय के लगभग 85 छात्र-छात्राएं एवं शिक्षकगण उपस्थित रहे। एसएसपी श्वेता चौबे द्वारा समस्त थाना प्रभारियों को भविष्य में भी इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाने हेतु निर्देशित किया गया है।

चोरी के माल के साथ एक गिरफ्तार

संवाददाता

उत्तरकाशी। पुलिस ने चोरी की घटना का खुलासा करते हुए एक को चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

आज यहां कोतवाली बड़कोट क्षेत्र अंतर्गत सिलक्यारा टनल निर्माण कार्य कर रही कम्पनी नवयुगा इंजीनियरिंग लिमिटेड से इलेक्ट्रॉनिक मोटर चोरी होने के मामले में बड़कोट पुलिस ने त्वरित कार्यवाही करते हुए मात्र 6-7 घंटे के भीतर घटना का सफल अनावरण कर आरोपी को

गिरफ्तार कर चोरी हुई मोटर बरामद की गयी। कम्पनी प्रबंधन द्वारा कोतवाली बड़कोट में इलेक्ट्रॉनिक मोटर चोरी होने संबंधी तहरीर दी गई, जिस पर पुलिस द्वारा तत्काल मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी, श्रीमती कमलेश उपाध्याय द्वारा चोरी के अनावरण तथा अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधिकारियों को जरुरी निर्देश दिये गये। पुलिस उपाधीक्षक बडकोट, चंचल शर्मा के निकट पर्यवेक्षण एवं प्रभारी निरीक्षक बड़कोट सुभाष चन्द्र के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुये पतारसी-सुरागरसी कर जानकारी जुटाते हुये मात्र 6-7 घण्टे के भीतर चोरी की घटना का सफल खुलासा कर कम्पनी की मोटर चुराने वाले भीम सिंह पुत्र धर्म सिंह, निवासी डण्डालगांव, बड़कोट, को गिरफ्तार तथा चोरी हुयी इलेक्ट्रनिक मोटर बरामद की गयी । मामले में पुलिस द्वारा बीएनएस की बढोतरी की गयी। पुलिस ने उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

केदारनाथ यात्राः भारी बारिश में तीन जगह भूस्खलन

हमारे संवाददाता

रूद्रप्रयाग। केदारनाथ धाम यात्रा के दौरान बीती रात हुई तेज बारिश ने सोनप्रयाग से गौरीकुंड जाने वाले महत्वपूर्ण मार्ग पर तीन अलग-अलग स्थानों पर भूस्खलन को जन्म दे दिया। इस घटना से यात्रा मार्ग पूरी तरह अवरुद्ध

30 मिनट में प्रशासन ने खोला मार्ग

हो गया, जिससे हजारों श्रद्धालु प्रभावित हुए। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित यह मार्ग केदारनाथ यात्रा का प्रमुख हिस्सा है, जहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में यात्री आते-जाते हैं।

सूचना मिलते ही जिला प्रशासन ने तुरंत अलर्ट जारी किया साथ ही एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, स्थानीय पुलिस और अन्य राहत टीमें घटनास्थल पर पहुंच गईं। टीमों ने अंधेरी रात और खराब मौसम की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों

में बचाव एवं राहत कार्य शुरू कर दिया।

घटना की जानकारी मिलते ही जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मौके का जायजा लिया। उन्होंने मौके पर तैनात अधिकारियों से पल-पल की अपडेट ली और मार्ग को शीघ्र सुचारु करने के निर्देश दिए। मुख्य फोकस श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा पर रखा गया ताकि किसी यात्री को अनावश्यक कठिनाई न हो। प्रशासन की तत्परता सराहनीय रही। कठिन परिस्थितियों के बावजूद राहत टीमों ने मात्र 30 मिनट के अंदर पैदल यात्रियों के लिए मार्ग को साफ कर दिया। फंसे हुए श्रद्धालुओं को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। रात भर अभियान चलाया गया, जिसमें यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई।

डीएम की आमजन से अपीलः भीषण गर्मी में बरतें जरूरी सावधानियां

संवाददाता

देहरादून। जिलाधिकारी सविन बसंल ने भीषण गर्मी और लू को ध्यान में रखते हुए आमजन से अपील की है कि दोपहर की तेज धूप से बचें और अनावश्यक घर से बाहर न निकले।

जिलाधिकारी सविन बंसल के निर्देश पर जनपद में लगातार बढ़ते तापमान एवं संभावित लू (हीट वेव) की स्थिति को देखते हुए जिला प्रशासन पूर्ण सतर्कता के साथ कार्य कर रहा है। भारत मौसम विज्ञान विभाग, देहरादून द्वारा जारी पूर्वानुमान के अनुसार आगामी दिनों में तापमान में 1 से 3 डिग्री सेल्सियस तक वृद्धि होने तथा मैदानी क्षेत्रों में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक पहुंचने की संभावना व्यक्त की गई है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए जिलाधिकारी ने सभी विभागों को समन्वित कार्रवाई करते हुए आवश्यक व्यवस्थाएं तत्काल सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। मौसम विभाग के अनुसार देहरादून नगर सहित आसपास के मैदानी क्षेत्रों में अत्यधिक गर्मी रहने तथा जौलीग्रांट एवं डोईवाला क्षेत्रों में तापमान 35 से 40 डिग्री सेल्सियस के मध्य रहने की संभावना है। इसके दृष्टिगत जिला प्रशासन द्वारा स्वास्थ्य, पेयजल, विद्युत, नगर निकाय, शिक्षा, श्रम एवं आपदा प्रबंधन सहित सभी संबंधित विभागों को आवश्यक सतर्कता एवं राहत उपाय सुनिश्चित करने के निर्देश जारी किए गए हैं। जिलाधिकारी के निर्देशानुसार जिला आपातकालीन परिचालन केंद्र को 24 घंटे सक्रिय रखा जाएगा।

हीट स्ट्रोक एवं डिहाइड्रेशन से प्रभावित मरीजों के उपचार हेतु विशेष चिकित्सा व्यवस्था बनाए रखने के निर्देश भी दिए गए हैं। नगर निकायों को सार्वजनिक स्थलों, बाजारों, बस अड्डों, रेलवे स्टेशन एवं प्रमुख चौराहों पर पेयजल, छायादार स्थल एवं वाटर टैंकर की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में अस्थायी शेड एवं विश्राम स्थलों की व्यवस्था विकसित की जाएगी। विद्युत विभाग को निर्बाध विद्युत आपूर्ति बनाए रखने तथा पेयजल व्यवस्था प्रभावित न होने देने के निर्देश दिए गए हैं। जल संस्थान एवं पेयजल विभाग को नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित करने तथा जल संकट वाले क्षेत्रों में अतिरिक्त टैंकर उपलब्ध कराने को कहा गया है। निर्माण स्थलों, औद्योगिक इकाइयों एवं बाहरी कार्यस्थलों पर कार्यरत श्रमिकों के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य अवधि को प्रातः एवं सायंकालीन समय तक सीमित रखने के निर्देश जारी किए गए हैं। आंगनबाड़ी केंद्रों एवं विद्यालयों में बच्चों के लिए पर्याप्त पेयजल एवं प्राथमिक उपचार व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। जिला प्रशासन द्वारा आशा कार्यकर्ताओं, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं ग्राम पंचायत स्तर के कार्मिकों के माध्यम से बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं, छोटे बच्चों एवं गंभीर रोगियों की नियमित निगरानी किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त जनसामान्य को लू से बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करने हेतु सोशल मीडिया, एफएम रेडियो, स्थानीय समाचार पत्र, मोबाइल मैसेज एवं सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से नियमित एडवाइजरी जारी की जाएगी। जिलाधिकारी ने सभी विभागों को समन्वय स्थापित करते हुए सतत निगरानी बनाए रखने तथा किसी भी आपात स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने हेतु पूर्ण तत्परता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

ऑल इंडिया आर्गेनाइजेशन ऑफ केमिस्ट्स की हड़ताल, दुकानें रही बंद

संवाददाता

देहरादून। ऑनलाईन दवा की बिक्री बंद करने सहित अपनी विभिन्न मांगों को लेकर ऑल इंडिया आर्गेनाइजेशन ऑफ केमिस्ट्स एंड ड्रगिस्टस के आहवान पर देश भर में केमिस्ट्स की दुकानें बंद रखकर अपना विरोध व्यक्त किया।

आज यहां ऑल इंडिया आर्गेनाइजेशन ऑफ केमिस्ट्स के आहवान पर पूरे देश भर में केमिस्ट्स ने हडताल रखकर अपनी दुकानें बंद रखी। उनकी मांग थी कि ऑनलाइन दवा कि बिक्री बंद की जाये तथा कॉरपोरेट्स द्वारा भारी डिस्कॉउट दिया जा रहा है इसको भी बंद किया जाये। उन्होंने ई-फार्मेसी का पुरजोर विरोध करते हुए इसको जन स्वास्थ्य और रोगी सुरक्षा के लिए बडा खतरा बताया। उनका कहना था कि ई-फर्मेसी से फर्जी और असत्यापित पर्चे, नशीली दवाओं और एंटीबायोटिक्स तक आसान पहुंच हो जाती है तथा फार्मासिस्ट ओर रोगी के बीच संवाद का अभाव रहता है तथा नकली या अशुद्ध दवाओं का जोखिम रहता है। उनका कहना था कि बडे कॉरपोरेट्स की मनमानी और बाजार बिगडने से अनियमित भारी छूट, छोटे केमिस्टों के अस्तित्व को संकट व पांच करोड की आजीविका प्रभावित हो रही है। उन्होंने सरकार से मांग की है कि अधिसूचना जीएसआर 220(ई) और जीएसआर 817 (इ) तुरंत वापस लिया जाए तथा अवैध ई-फार्मेसी पर सख्त प्रतिबंध लगाया जाये। सारा दिन केमिस्ट की दुकानों के बंद रहने से मरीजों व उनके तिमारदारों को काफी परेशानियों का सामना करना पडा।

उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन ने पूर्व सीएम बीसी खंडूड़ी को दी श्रद्धांजलि

देहरादून (सं)। उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन, राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से.नि) एवं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बुधवार को वसंत विहार, देहरादून में पूर्व मुख्यमंत्री मेजर जनरल भुवन चंद्र खंडूड़ी (सेवानिवृत्त) के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उपराष्ट्रपति सी.पी राधाकृष्णन ने शोक संतप्त परिजनों से मुलाकात कर अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त की तथा दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

चम्बा-आराकोट मार्ग पर हुई हेलीकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग

हमारे संवाददाता

टिहरी। चम्बा-आराकोट क्षेत्र के ऊपर उड़ान के दौरान आज सुबह ट्रांस भारत एविएशन कंपनी के एक हेलीकॉप्टर को तकनीकी समस्या उत्पन्न होने पर सत्यो-सकलाना क्षेत्र के खेतों में सुरक्षित इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। हेलीकॉप्टर में पायलट सहित कुल 6 यात्री सवार थे, जो सभी सुरक्षित हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार हेलीकॉप्टर बद्रीनाथ धाम से देहरादून की ओर जा रहा था। उड़ान के दौरान हाईटेंशन विद्युत लाइन के संपर्क में आने से हेलीकॉप्टर के पिछले हिस्से को क्षति पहुंची। घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस, प्रशासन एवं संबंधित विभागों की टीम मौके पर पहुंची तथा सुरक्षा एवं राहत कार्य प्रारम्भ किया गया। क्षेत्र में आवश्यक सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। प्राथमिक जांच में सभी यात्री सुरक्षित पाए गए हैं। घटना के कारणों की विस्तृत जांच संबंधित तकनीकी एवं एविएशन एजेंसियों द्वारा की जा रही है।

पुलिस द्वारा आमजन से अपील की गई है कि घटना से संबंधित अपुष्ट अथवा भ्रामक सूचनाओं का प्रसार न करें तथा केवल आधिकारिक जानकारी पर ही विश्वास करें।

राजकीय शोक के बीच 'जश्न के सुर'

❑पूर्व सीएम मेजर जनरल बीसी खड़ूड़ी के निधन पर पूरे प्रदेश में तीन दिन का राजकीय शोक
❑देहरादून के निजी संस्थानों में कार्यक्रमों और उत्सवों की तस्वीरें सवाल खड़े कर रही
❑यक्ष प्रश्न क्या निजी संस्थानों पर लागू नहीं होते सरकारी संवेदनाओं के कोई भी नियम

संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वरिष्ठ जननेता मेजर जनरल भुवन चंद्र खंडूड़ी के निधन पर प्रदेश सरकार ने तीन दिन के राजकीय शोक की घोषणा की है। सरकारी भवनों पर झंडे झुके हैं, कई सरकारी कार्यक्रम स्थगित कर दिए गए हैं और राजनीतिक-सामाजिक स्तर पर शोक की भावना व्यक्त की जा रही है। लेकिन इसी बीच कुछ निजी शिक्षण संस्थानों में चल रहे सांस्कृतिक कार्यक्रमों और आयोजनों ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

दून स्थित डीआईटी जैसे बड़े संस्थानों में कथित तौर पर सामान्य गतिविधियों और आयोजनों की तस्वीरें सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर भी बहस छिड़ गई है। लोग सवाल पूछ रहे हैं कि जब पूरा प्रदेश राजकीय शोक में है तो क्या ऐसे संस्थानों पर संवेदनशीलता और सरकारी निर्देश लागू नहीं होते? क्या निजी संस्थानों के लिए नियम और परंपराएं अलग हैं?

राजकीय शोक केवल औपचारिक सरकारी आदेश नहीं होता, बल्कि वह समाज की सामूहिक संवेदना और सम्मान का प्रतीक माना जाता है। खासकर जब बात ऐसे व्यक्ति की हो जिसने सेना और राजनीति दोनों में प्रदेश की पहचान बनाई हो। ऐसे समय में बड़े आयोजनों, उत्सवों और मनोरंजन कार्यक्रमों को सीमित करना सामाजिक मर्यादा का हिस्सा माना जाता रहा है। यही कारण है कि अब लोगों के बीच यह चर्चा तेज हो गई है कि क्या प्रशासन ने निजी संस्थानों को स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए थे? और यदि किए थे तो उनका पालन क्यों नहीं हुआ? यदि निर्देश जारी नहीं हुए तो यह भी प्रशासनिक गंभीरता पर सवाल खड़ा करता है।

शिक्षा संस्थानों को केवल पढ़ाई का केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों और संवेदनशीलता का माध्यम भी माना जाता है। ऐसे में यदि राजकीय शोक के दौरान भी सामान्य उत्सव और मंचीय कार्यक्रम जारी रहें, तो यह नई पीढ़ी के सामने किस तरह का संदेश प्रस्तुत करता हैकृयह भी विचार का विषय बन गया है।

अब निगाहें सरकार और प्रशासन पर टिक गई हैं। प्रदेश में कई सामाजिक संगठनों और नागरिकों ने मांग उठाई है कि मामले का संज्ञान लिया जाए और स्पष्ट किया जाए कि राजकीय शोक के दौरान निजी संस्थानों की क्या जिम्मेदारी तय होती है। क्योंकि सवाल केवल एक कार्यक्रम का नहीं, बल्कि उस संवेदनशीलता का है जो किसी समाज की पहचान बनती है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।